Postal Regn No./C.G/RYP DN/48/2022-24 website- www.dvpnews.in रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 97 ● वर्ष : 11 ● रायपुर, मंगलवार 03 अक्टूबर 2023 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

कल की आशा में सोने वाला व्यक्ति कभी जाग नहीं सकता।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

PM GatiShakti National Master Plan for Multi-Modal Connectivity | आज़ादी का अमृत महोत्सव | G20 भारत 2023 INDIA

छत्तीसगढ़ के समग्र विकास को समर्पित मोदी सरकार

₹ 26 हजार करोड़ से अधिक की विकास परियोजनाओं का राष्ट्र को समर्पण और शिलान्यास

राष्ट्र को समर्पण

एनएमडीसी स्टील लिमिटेड का नगरनार स्टील प्लांट

• बस्तर के स्थानीय समुदाय का सपना हुआ पूरा • हजारों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार
• भारत और दुनिया के स्टील मानचित्र पर स्थापित हुआ बस्तर

जगदलपुर-दंतेवाड़ा रेल लाइन का दोहरीकरण

• बेहतर यात्री और माल परिवहन कनेक्टिविटी
• देश की अर्थव्यवस्था में अहम योगदान

अंतागढ़ – ताड़ोकी नई रेल लाइन

• छत्तीसगढ़ के दक्षिणी भाग तक सीधा रेल संपर्क
• आदिवासी बहुल क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक उत्थान का नया युग

राष्ट्रीय राजमार्ग-43 (पुराना रा. रा. - 78) के कुनकुरी से छत्तीसगढ़-झारखण्ड सीमा खंड का 2 लेन मय पेव्ड शोल्डर में चौड़ीकरण एवं उन्नयन

• छत्तीसगढ़ और झारखंड के बीच यात्री और माल की निर्बाध आवाजाही
• जशपुर, सरगुजा एवं आसपास के क्षेत्रों का सामाजिक-आर्थिक विकास

शिलान्यास

बोरीडांड-सूरजपुर रेल लाइन दोहरीकरण परियोजना

• छत्तीसगढ़ को देश के उत्तरी एवं पश्चिमी भाग से जोड़ने का सुविधाजनक मार्ग
• स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन

अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत जगदलपुर रेलवे स्टेशन का उन्नयन

• स्थानीय पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र को बढ़ावा
• रेल उपयोगकर्ताओं के लिए बेहतर सुविधाएं

शुभारंभ

ताड़ोकी-रायपुर DEMU ट्रेन सेवा

• अंतागढ़ से तारोकी तक ट्रेन सेवा का विस्तार • विद्यार्थियों, व्यापारियों और व्यवसायियों को लाभ

श्री नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री

के कर कमलों द्वारा

गरिमामयी उपस्थिति

श्री भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्री नारायण चंदेल
विधायक एवं नेता प्रतिपक्ष, छत्तीसगढ़ विधान सभा

श्री दीपक बैज
सांसद

श्री अरुण साव
सांसद

दिनांक: 3 अक्टूबर, 2023 | समय: 1100 बजे | स्थान: लालबाग मैदान, जगदलपुर

D-14/23-24

कार्यक्रम का सीधा प्रसारण DD NEWS पर देखें

भारतीय रेल

/RailMinIndia पर हमें फॉलो करें

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार/देश
रायपुर, मंगलवार 03 अक्टूबर 2023
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

आदिवासी समाज का राजनीतिक दल पंजीकृत, हमर राज पार्टी के नाम से चुनाव मैदान में उतरेगी पार्टी

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ में आदिवासी समाज का राजनीतिक दल पंजीकृत हो गया। उक्त संबंध में पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं सर्व आदिवासी समाज के अध्यक्ष अरविंद नेताम ने पत्रवार्ता लेकर विधिवत् इसकी घोषणा की। छत्तीसगढ़ में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव में 50 सीटों पर चुनाव लड़ेगी जिसमें 30 आदिवासी बाहुल्य सीटों में प्रत्याशियों के नामों पर चयन हो चुका है और 20 सीटों को रिजर्व रखा है। उक्त बातें हमर राज पार्टी के संरक्षक अरविंद नेताम, पार्टी के अध्यक्ष विनोद कुमार नागवंशी ने बताई। अरविंद नेताम ने कहा कि सर्व आदिवासी समाज, रूढ़ीजन्य परम्परा पर आधारित समाज से सत्ता के लिए हमर राज पार्टी बनाया गया है, जिसका पंजीयन भारत निर्वाचन आयोग नई दिल्ली से हो गया है। हमर राज पार्टी चुनाव मैदान अपने उम्मीदवारों को उतारने स्वशक्ति के साथ पिछड़ा वर्ग समाज के साथ तालमेल करने तैयार है। वर्तमान में आदिवासियों की समस्याओं को हमारे द्वारा चुने गए कांग्रेस और बीजेपी के विधायक सांसद नहीं उठाते है, ऐसे में अपनी बात कहने के लिए सर्व आदिवासी समाज स्वयं विधायक,सांसद का चुनाव लड़ेंगे। चुनाव चिन्ह को लेकर नियमानुसार पंद्रह चिन्ह दिए गए हैं, कयास हैं कि कुएं और पानी से संबंधित कोई बर्तन राजनीतिक दल का निशान हो सकता है। इस दौरान सर्व आदिवासी समाज के कार्यकारी अध्यक्ष बी.एस.रावटे, अध्यक्ष गोंडवाना महासभा एवं हमर राज पार्टी के अध्यक्ष अकबर कोर्राम, हमर राज पार्टी के महासचिव विनोद नागवंशी, उपाध्यक्ष परशुराम भगत, प्रदेश प्रभारी जीवराखन मराई, जनसंपर्क जीवनराखन लाल उसारे एवं अन्य उपस्थित रहे।

एक अक्टूबर को बीरगांव निगम क्षेत्र में चला विशेष स्वच्छता अभियान

बीरगांव (विश्व परिवार)। स्वछता ही सेवा पखवाडा के तहत नगर पालिक निगम बीरगाँव क्षेत्र में 1 अक्टूबर को राष्ट्रीय स्तर का विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिसमें वार्ड 27 मठपारा व उरकुरा मुक्तिधाम, वार्ड नंबर16 एवं 17 छत्तीसगढ़ महतारी बंजारी मन्दिर के साथ निगम बीरगांव के समस्त 40 वार्डों में श्रमदान का अभियान चलाया गया। इस दौरान निगम महापौर नंदलाल देवांगन निगम आयुक्त, बृजेश क्षत्रीय, उपअभियंता केवल साहू, अमन चंद्राकर स्वछता निरीक्षक राजेश क्षत्रिय, पीआईयू विकास जांगड़े, एपीएम एकता दीवान एवं समस्त वार्ड पार्षद, सफाई कर्मचारीं एवं सुपरवाइजर के अलावा स्वच्छता दीदी सहित वार्डवासी भारी संख्या में उपस्थित थे।

राष्ट्रीय पार्टियों से मिले यादवों को पांच टिकट, संगठनों ने एक राय में लाया प्रस्ताव

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद जातिगत समीकरण के हिसाब से राजनीतिक पार्टियां टिकट वितरण में ओबीसी को साधने में पीछे नहीं रहती है। छत्तीसगढ़ में यादव समाज, साहू जाति के बाद दूसरे नंबर पर आने वाला पिछड़ा वर्ग की जाति है, जिसे गत विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने अपनी ओर से तीन यादवों को विधानसभा का टिकट दिया था, जिसमें तीनों यादवों ने जीत दर्ज की थी, वहीं बीजेपी सिर्फ एक यादव को चुनाव लड़ाया था। अखिल भारत वर्षीय यादव महासभा के प्रदेश महासचिव माधव लाल यादव यादव ने बयान दिया है कि कांग्रेस हो या बीजेपी या कोई भी राजनीतिक दल अगर यादवों का टिकट वितरण में समर्थन करेगा तो छत्तीसगढ़ में निवासरत 25 लाख यादव का समर्थन उसे प्राप्त होगा। छत्तीसगढ़ यादव संगठनों ने एक राय से यह तय किया है कि अगर उनकी जाति समाज की राजनीतिक उपेक्षा की गई तो उसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। माधव लाल यादव ने कहा कि अगर कोई राष्ट्रीय दल यादव समाज को राजनीतिक अधिकार से वंचित कर उसे पीछे धकेलने की कोशिश करेंगे तो छत्तीसगढ़ के प्रत्येक जिलों में यादव संगठनो के माध्यम से ऐसी राजनीतिक पार्टियों को चुनावी सबक सिखाया जाएगा।

एनसीसी द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। एनसीसी रायपुर ग्रुप मुख्यालय कोटा स्थित कार्यालय में दिनांक 01 अक्टूबर को एक घंटें की थीम पर रायपुर स्थित सभी एनसीसी की इकाइयों के द्वारा स्वच्छता के संबंध में किए गए कार्यों की सराहना और पुरुस्कृत करने के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के तहत 3 छग एयर एन सीसी इकाई, 27 सीजी बटालियन एनसीसी, 8 सीजी बटालियन एनसीसी, 1 छग नेवल यूनिट एवं 5 सीटीआई एनसीसी इकाई के 25-25 कैडेट शामिल हुए, रायपुर ग्रुप के मुखिया ब्रिगेडियर विक्रम सिंह चौहान (युद्ध सेवा मेडल) ने कैडेट्स के द्वारा स्वच्छता के संबंध में चलाए जा रहे अभियान की सराहना की और कहा कि इस अभियान को निरंतर जारी रखना है। उन्होंने विभिन्न इकाइयों के सफाई कर्मचारी को पुरुस्कृत किया जिनमें कमलेश धृतलहरे, लक्ष्मी नारायण साहू, रामचंद्र गोदरे, नेहा स्वामी, नवल प्रसाद खलको, यश देव साहू, प्रहलाद निषाद एवं विजय धृतलहरे अन्य शामिल हैं।

स्वच्छ भारत के संदेश को लेकर बनाया गांधी चश्मा

रायपुर (विश्व परिवार)। पर्यावरण विदुषी, समाजसेविका, रायपुर नगर निगम के नो प्लास्टिक कैंपेन मोर रायपुर और स्वच्छता अभियान एम्बेसेडर श्री शुभांगी आप्टे ने गांधी और शास्त्री जयंती के उपलक्ष्य पर उन्हें नमन कर स्वच्छता का संकल्प लिया। इस दौरान उन्होंने गांधी जी के त्याग और तपस्या समर्पण को लेकर एक हैंड मेड चश्मा बनाया है जिसके दोनों साईड में स्वच्छ भारत लिखा हुआ है।

एनएमडीसी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 154वीं जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित की

हैदराबाद (विश्व परिवार)। भारत की सबसे बड़ी लौह अयस्क उत्पादक कंपनी एनएमडीसी ने आज अपने प्रधान कार्यालय और देश भर की सभी परियोजनाओं में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को उनकी 154वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रधान कार्यालय में गांधी जयंती समारोह का प्रारम्भ श्री बी साहू, अधिशासी निदेशक (उत्पादन समन्वय एवं सुरक्षा), श्री एम जयपाल रेड्डी, अधिशासी निदेशक (संसाधन योजना एवं आरईडी), श्री ए एस पार्थसारथी, अधिशासी निदेशक/कंपनी सचिव और, श्री सत्येंद्र राय, अधिशासी निदेशक (का. एवं प्रशा.तथा डीटी) द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों की उपस्थिति में महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रवलन और के साथ हुआ।

राष्ट्रीय खनन कंपनी ने महात्मा गांधी के सम्मान में 15 सितम्बर से 2 अक्तूबर तक बडे स्तर पर स्वच्छता ही सेवा अभियान चलाया। इस दो सप्ताह के कार्यक्रम के दौरान, पर्यावरण के प्रति जागरूक व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न इंटरैक्टिव कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं और स्वच्छता अभियानों का आयोजन किया गया। सफाई मित्रों को सम्मानित करने और स्वच्छता ही सेवा प्रतियोगिता के विजेताओं को बधाई देने के लिए आज पुरस्कार वितरण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री बी साहू, अधिशासी निदेशक (उत्पादन समन्वय एवं सुरक्षा), ने कहा कि इस गांधी जयंती पर, आइए हम महात्मा गांधी के कालजयी ज्ञान का स्मरण करें और एक अधिक संवेदनशील और समावेशी समाज विकसित करने और एक स्वच्छ, हरित और अधिक शांतिपूर्ण विश्व की दिशा में काम करें। सभा को संबोधित करते हुए, श्री सत्येंद्र राय, अधिशासी निदेशक (का. एवं प्रशा. एवं डीटी) ने कहा कि दिन भारत के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व में बहुत महत्व रखता है, क्योंकि यह गांधी के सिद्धांतों की याद दिलाता है। गांधी जयंती पर, हम सब महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित सत्य, अहिंसा और स्वराज के मूल सिद्धांतों से प्रेरणा ग्रहण करें। प्रधान कार्यालय में वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों की भागीदारी के साथ स्वच्छता अभियान कार्यक्रम का समापन हुआ।

एनटीपीसी कोरबा ने स्वच्छता पखवाड़ा 2023- स्वच्छता ही सेवा के तहत एनटीपीसी कोरबा टाउनशिप में प्रभात फेरी और राष्ट्रपिता के श्रद्धांजलि का आयोजन किया

कोरबा (विश्व परिवार)। भारत सरकार के दिशा-निर्देशानुसार स्वच्छ भारत मिशन के तहत एनटीपीसी कोरबा द्वारा 01 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2023 तक स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर एनटीपीसी कोरबा के परियोजना प्रमुख श्री बी.रामचंद्र राव ने 01 अक्टूबर 2023 को स्वच्छता पखवाड़ा-स्वच्छता ही सेवा के अवसर पर शपथ ली।

इस पखवाड़े के दौरान 2 अक्टूबर 2023 को एनटीपीसी कोरबा ने एनटीपीसी कोरबा टाउनशिप में प्रभात फेरी का आयोजन किया और राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि भी दी। प्रभात फेरी के लिए एनटीपीसी कोरबा ने एकजुट होकर एक घंटे तक सहयोग किया।

प्रभात फेरी का नेतृत्व श्री बी.आर. राव, परियोजना प्रमुख, एनटीपीसी कोरबा ने किया। इस अवसर पर, श्री मधु एस., महाप्रबंधक (ओ एंड एम), श्री सोमनाथ भट्टाचार्य, महाप्रबंधक (संचालन), श्री मनीष वी. साठे, महाप्रबंधक (ऐश डाइक), श्री प्रभात राम, अपर महाप्रबंधक (एचआर) और अन्य वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी, यूनियन एवं एसोसिएशन के सदस्य, एनटीपीसी कोरबा टीम उपस्थित रही।

इसी क्रम में एनटीपीसी कोरबा टाउनशिप के प्रगति क्लब में महात्मा गांधी की 154वीं जयंती पर सभी ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने स्वच्छता को जो महत्व दिया, उससे जनता को स्वच्छता के लिए प्रेरणा मिली। हर कोई चाहता है कि उनके विचार आज की दुनिया में हर इंसान को एकता और सद्भाव को बढ़ावा देने में सक्षम बनाएं और उनकी कालजयी शिक्षाएं हमारे मार्ग को रोशन करती रहें।

गौरतलब है कि स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान एनटीपीसी कोरबा में विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम और प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार का एक स्वच्छ भारत मिशन है जो भारत को स्वच्छ बनाने का समर्थन करता है। यह अभियान प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया था और महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के दृष्टिकोण का सम्मान करने के लिए 2 अक्टूबर 2014 को लॉन्च किया गया था।

धान, रेल, पीएससी सब पर प्रधानमंत्री ने गलत बयानी किया : भूपेश बघेल

नगरनार इस्पात संयंत्र बेचने के विरोध में 3 अक्टूबर को बस्तर बंद: दीपक बैज

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा है कि नगरनार स्टील प्लांट को निजी हाथों में देने का बस्तर में विरोध हो रहा है। नगरनार स्टील प्लांट केंद्र नहीं चला पा रहा है तो उसे छत्तीसगढ़ सरकार को दे दो हम उसे चलाएंगे। केंद्र सरकार ने कहा कि विनिवेशीकरण की प्रक्रिया में ऐसा क्लाज लगा दिया है कि निजी हाथों की जगह राज्य सरकार यह प्लांट ना ले सके।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि जब नगरनार स्टील प्लांट की स्थापना हो रही थी तो छत्तीसगढ़ के लोगों ने इस प्लांट को निजी हाथों में देने के लिए जमीन नहीं दी,हमने जमीन एनएमडीसी को दिया था। हम नगरनार स्टील प्लांट को निजी हाथों में देने का विरोध करेंगे। मुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार से बस्तर में एम्स अस्पताल खोलने की मांग की। इससे वहां स्वास्थ्य सुविधाएं बेहतर हो सकेंगी। ज्योतिरादित्य सिंधिया भी आ रहे है। केंद्रीय उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से बस्तर की हवाई सेवाओं के विस्तार करने की भी मांग रखी। जगदलपुर से जबलपुर से दिल्ली के लिए उड़ान शुरू करें, हम क्षतिपूर्ति के रूप में एक करोड़ रुपए देने के लिए तैयार हैं। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि पीएससी मामले को लेकर कहा कि पीएससी में गड़बड़ियां हुई है तो हमारी सरकार ने तो दोषियों पर कार्यवाही की बात कही है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने पत्रकारों को संबोधित करते हुये कहा कि भाजपा की मोदी सरकार बस्तर के नगरनार में एनएमडीसी द्वारा लगाये गये इस्पात संयंत्र को बेच रही है। नगरनार इस्पात संयंत्र बस्तर के लोगों की भावनाओं और उनके आर्थिक हितों से जुड़ा हुआ है। कांग्रेस पार्टी इसका विरोध करती है। बस्तर के लोगों की भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिये कांग्रेस जन आंदोलन छेड़ेगी। हम 3 अक्टूबर को बस्तर बंद का पूरा समर्थन करते है।

मठपुरैना, भाटागांव के तीन वार्डों को मिली 66.5 लाख रुपए के विकास कार्यों की सौगात

रायपुर में प्रतिदिन बह रही विकास की गंगा : बृजमोहन अग्रवाल

रायपुर (विश्व परिवार)। भाजपा सरकार में ही रायपुर का सर्वांगीण विकास हुआ है, पिछले पांच सालों में कांग्रेस की सरकार ने इसे गड्ढा प्रदेश बना दिया है। भूमिपूजन एवं लोकार्पण की श्रंखला में पूर्व मंत्री व वरिष्ठ भाजपा विधायक श्री बृजमोहन अग्रवाल ने सोमवार को कहा कि भाटागांव में ओवर ब्रिज, सड़क का निर्माण भाजपा कार्यकाल में किया गया। 20 साल पहले यहां गड्ढे ही गड्ढे थे, भाजपा की सरकार में रायपुर को गांव से महानगर बना दिया है। जबकी पिछले पांच सालों में भूपेश सरकार ने इसे नर्क बना दिया है।

बृजमोहन अग्रवाल ने हमलावर होते हुए कहा कि भूपेश सरकार में प्रदेश की सड़कों में इतने गड्ढे हो गए हैं, जिससे अब तक कई लोगों की जान जा चुकी है। प्रदेश में अपराध चरम पर है और अपराधी बेखौफ होकर बहनों, मासूम बेटियां की खुलेआम इज्जत लूट रहे हैं और भूपेश सरकार चादर तानकर आंखें मूंद कर सो रही है। हमें अपने छत्तीसगढ़ को विकसित राज्य बनाना है तो कमल फूल की सरकार बनानी पड़ेगी। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमारे प्रदेश में विकास की गारंटी दी है तो यहां पर विकास जरूर होगा। भाजपा की सरकार बनने पर हमारे द्वारा किए गए सभी वादे पूरे किए जाएंगे। कार्यक्रम में यहां की पार्षद सावित्री जगमोहन अपने समर्थकों के साथ मौजूद रहीं।

बेहतर जीवन जीने के लिए हो शिक्षा नीति : डॉ.मुबारक कापड़ी

रायपुर (विश्व परिवार)। शिक्षाविद् डॉ. मुबारक कापड़ी दिनांक 03 अक्टूबर को शहीद स्मारक भवन में नई शिक्षा पद्धति पर टीचर्स और पेरेंट्स के समक्ष अपने विचार साझा करेंगे। वे बताऐंगे कि नई शिक्षा नीति में सिर्फ बच्चों के भविष्य को बनाने के लिए नहीं बल्कि उन्हें अच्छा जीवन जीने की सीख हो। शिक्षा आधारित और अन्य अब तक 17 पुस्तकों लिख चुके डॉ. मुबारक कापड़ी शिक्षकों को शिक्षण में डिजिटल प्रौद्योगिकी की चुनौतियों को स्वीकार करने की सलाह देते हैं, साथ ही बच्चों के उज्जवल भविष्य हेतु पेरेंट्स को जागरूक होने की बात वे कहते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में वे बच्चों के साथ पेरेंट्स को बदलती दुनिया के साथ अपनी जिम्मेदारियों को समझने की सलाह देते हैं।

महारानी फार्म जैन समाज ने किया त्यागी व्रतियों का सम्मान

जयपुर (विश्व परिवार)। श्री दिगंबर जैन मंदिर गायत्री नगर, महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर मंदिर प्रबंध समिति के तत्वावधान में आयोजित विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के साथ दस लक्षण, पर्यूषण महापर्व मनाया, इसके अंतर्गत 29 सितंबर 2023 प्रात: 8:30 बजे आदिनाथ भवन में भाद्रमास,पर्यूषण महापर्व में उपवास करने वालों का अभिनंदन, सम्मान कर भव्य शोभा यात्रा निकाली।

मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष कैलाश छावड़ा ने अवगत कराया कि पर्यूषण महापर्व, अनंत चतुर्दशी पर सांय 6:00 बजे श्री जी के अभिषेक हुए, इस अवसर पर श्री जी के माल प्राप्त करने का सौभाग्य अशोक विनय जी गंगवाल को प्राप्त हुआ, मंदिर जी में समाज के सहयोग से रजत अखंड ज्योति का लोकार्पण अशोक -विनय जी गंगवाल, अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन एवं 48 दिवसीय भक्तामर पाठ के संयोजक अनीता बड़जात्या के कर कमल द्वारा हुआ। धर्म सभा को संचालित करते हुए अरुण शाह ने मंदिर प्रबंध समिति के पदाधिकारी, समाज के गणमान्य महानुभावों व महिलाओं द्वारा त्यागी व्रती अनिल जी गदिया, निर्मला जी गंगवाल, विमला जी पापड़ीवाल, प्रमिला जी शाह, रेखा जी सोगानी, अनीता जी रावंका, जय कुमार जी हरसोरा, राकेश जी पाटोदी, समीक्षा जी गदिया, नमन जी गोधा, शोभा जी सेठी, मनोज जी बोहरा, मानक जी शाह, आदि का सम्मान किया। तत्पश्चात को बाग्गी में बैठाकर बैंड बाजों के साथ विभिन्न मार्गो से शोभायात्रा निकाली गई जो मंदिर जी में पहुंची। मंदिर प्रबंध समिति के मंत्री राजेश बोहरा ने अवगत कराया कि इस अवसर पर संपूर्ण समाज महिला पुरुष उपस्थित थे, धर्म सभा को कैलाश छाबड़ा, अरुण शाह, उदयभान जैन ने संबोधित किया तथा सभी का आभार प्रकट किया। अशोक जी पापड़ीवाल परिवार की ओर से अल्पाहार रखा गया।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन,फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./6197/न.पा.नि./जोन क्रं.2/2023
रायपुर दिनांक : 27-09-2023

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 6197
वार्ड का नाम- 27-इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR737A00267** जो कि निगम अभिलेख में **श्री/श्रीमती ASGARI BEGAM** पिता/पति, श्री/श्रीमती ... के नाम से दर्ज है, जिसको **श्री/श्रीमती 1 फरजाना परवीन 2 सरवरी कुरैशी 3 मोहम्मद अनवर 4 निशांत मुजाहिद** पिता/पति, श्री/श्रीमती **1 फरजाना परवीन पति अब्दुल रउफ कुरैशी 2 सरवरी कुरैशी पति स्व.मोहम्मद सरवर 3 मोहम्मद अनवर पिता स्व.मो.मुजाहिद 4 निशांत मुजाहिद पिता मो.अब्दुल मुजाहिद** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत वसीयत नामा** वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के.डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 2
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कांग्रेस भरोसा यात्रा में शामिल हुए विधायक कुलदीप जुनेजा एवं जिला अध्यक्ष गिरीश दुबे

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के तत्वाधान में पूरे प्रदेश के 90 विधानसभा में कांग्रेस भरोसा यात्रा का आयोजन किया गया है राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जयंती के अवसर पर कांग्रेस पार्टी के जन कल्याण कारी नीतियों पर बल देने कांग्रेस भरोसा यात्रा के आयोजन पर आयोजित बाइक रैली में उत्तर विधायक कुलदीप सिंह जुनेजा एवम जिला अध्यक्ष गिरीश दुबे सैकड़ों कांग्रेसी कार्यकर्ताओं के साथ शामिल हुए जिसमे हर वार्ड में विधायक कुलदीप सिंह जुनेजा के बाइक रैली का हर वार्ड में भव्य स्वागत हुआ हर वार्ड के पार्षद एवम ब्लॉक अध्यक्षों ने पुष्प वर्षा कर सॉल श्रीफल भेंट कर श्री जुनेजा का अभिवादन किया यह बाइक रैली विधायक जुनेजा के देवेंद्र नगर कार्यलय से शुभारंभ होकर लाल चौक जहा पर पटेल समाज के गौरव भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल को माल्यार्पण कर रैली आगे बढ़ी वहा से त्रिमूर्ति नगर देवेंद्र नगर, फाफाडीह अंडर एक्सप्रेसवे होते हुए पंडरी, लोधी पारा, शंकर नगर, लाल बहादुर शास्त्री वार्ड, रविशंकर शुक्ल वार्ड, तेलीबांधा, गौरव पथ, घड़ी चौक जय स्तंभ चौक, मौदहापारा होते हुए स्टेशन रोड गुरुद्वारा में यात्रा का सफल समापन हुआ इस अवसर पर वरिष्ठ कांग्रेसी संजय पाठक, जिला अध्यक्ष गिरीश दुबे, वार्ड के पार्षद सुरेश चन्नावर, आकाश तिवारी, रितेश त्रिपाठी, एल्डरमैन सुनील भुवाल, अमितेश भारतद्वाज, ब्लॉक अध्यक्ष संजय सोनी, अरूण जांघेल, दीपा बग्गा, सुनील छतवानी, पार्षद, पार्षद अनवर हुसैन, पार्षद नीलम जगत, पार्षद शीतल कुलदीप बोगा, पार्षद पुरषोत्तम बेहरा, पार्षद कामरान अंसारी, अजीत कुकरेजा मनोज मसंद, राकेश धोत्रे आदि उपस्थिति रहे।

गजानंद अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय में पत्रकारिता प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूर्ण

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। शासकीय गजानन अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय भाटापारा में हिंदी विभाग द्वारा आयोजित मूल्य संबंधित पाठ्यक्रम दिनांक 12 सितंबर से 30 सितंबर तक संचालित हुआ। समापन समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में शासकीय विज्ञान महाविद्यालय रायपुर के अवकाश प्राप्त हिंदी विभाग अध्यक्ष प्रोफेसर शिव कुमार शर्मा उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर श्रीमती विनोद शर्मा ने की इस अवसर पर छात्र-छात्राओं द्वारा गजानन पत्रिका एवं भाटापारा एक्सप्रेस नामक समाचार पत्र परियोजना कार्य के रूप में पूर्ण कर विभाग को सोपा गया। कार्यक्रम का विवरण देते हुए हिंदी विभाग अध्यक्ष डॉक्टर उमाकांत मिश्रा ने कहा की पत्रकारिता प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में श्री संजीव तिवारी दैनिक भास्कर भाटापारा, डॉक्टर डीडी महंत, प्रोफेसर चितरंजन कर अवकाश प्राप्त भाषा विज्ञान विभाग अध्यक्ष पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर और प्रसिद्ध पत्रकार डॉक्टर गिरीश पंकज रायपुर तथा वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती मंजूषा मन ने महाविद्यालय में उपस्थित होकर छात्र-छात्राओं को पत्रकारिता से संबंधित बहुमूल्य ज्ञान प्रदान किया। ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर दिल्ली विश्वविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉक्टर गिरीश शास्त्री, काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी के रिसर्च स्कॉलर श्री राजू राजावत तथा महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी बिहार से पत्रकारिता के शोधार्थी श्री रोहिताश कुमार ने सार गर्वित व्याख्यान देकर छात्र-छात्राओं को उपकृत किया। मुख्य अतिथि प्रोफेसर शर्मा ने पाठ्यक्रम की सराहना करते हुए छात्रों के करियर बनाने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। प्राचार्य ने विभाग की सराहना करते हुए इस प्रकार के पाठ्यक्रम संचालित करते रहने का संदेश दिया। अतिथि व्याख्याता डॉक्टर मनीष ने धन्यवाद ज्ञापन एवं कार्यक्रम का संचालन कुमारी पूजा ने किया। इस अवसर पर कुमारी खिलेश्वरी कुमारी नेहा नवीन हर्ष लीना चंद्र कुमारी मोतीम आदि एम ए प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के छात्र-छात्राएं बहुत संख्या में उत्साह पूर्वक उपस्थित रहे तथा कार्यक्रम को अपने लिए अत्यंत उपयोगी बतलाएं। पाठ्यक्रम संचालित करने में हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक श्री राजेश कुमार का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर, मंगलवार 03 अक्टूबर 2023

पाली-तानाखार विधानसभा के ग्राम सिंघिया में कांग्रेस का संकल्प शिविर हुआ सम्पन्न

कोरबा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस पार्टी सभी जिलों में संकल्प शिविर का आयोजन कर रही है। इसी क्रम में पाली.तानाखार विधानसभा के ग्राम सिंघिया में कांग्रेस के विधानसभा स्तरीय संकल्प शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें कांग्रेस कार्यकर्ताओं को एकजुट रहकर बूथ मैनेजमेंट और सरकार के कामों को जनता तक पहुंचाने का संदेश दिया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष दीपक बैज, विधानसभा अध्यक्ष डॉ चरणदास महंत, कोरबा लोकसभा सांसद श्रीमती ज्योत्सना महंत, पाली.तानाखार विधायक मोहितराम केरकेट्टा, राज्य गौ सेवा आयोग सदस्य प्रशांत मिश्राए श्रम कल्याण आयोग के सदस्य नवीन सिंह कार्यक्रम में शामिल हुए। कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज ने विधानसभा स्तरीय संकल्प शिविर में कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं को संकल्प शपथ दिलाई। कार्यक्रम के दौरान दीपक बैज ने पार्टी कार्यकर्ताओं को एकजुट होकर पार्टी की जीत सुनिश्चित करने का आह्वान किया साथ ही पूरे शिविर में कांग्रेसियों ने आगामी विधानसभा चुनाव में पुन: राज्य में कांग्रेस की सरकार बनाने की हुंकार भरी। इस संकल्प शिविर में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल भी मुख्य रूप से उपस्थित होने वाले थेए लेकिन अपरिहार्य कारणों से वह उपस्थित नहीं हो सके। प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज ने अपने उद्बोधन में पार्टी कार्यकर्ताओं को एकजुट होने का संदेश दिया। कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि ष्आज तीन विधानसभा में हो रहा संकल्प शिविर का मकसद है कि हमारा एक-एक कार्यकर्ता इस शिविर के माध्यम से कांग्रेस सरकार की योजनाओं को जनता तक पहुंचाये और संकल्प लेकर जाए। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार पुन: बनाना है और गांव गरीब लोगों की सेवा करना है ये कांग्रेस का संकल्प शिविर का मकसद है। डॉ चरणदास महंत ने कांग्रेस पार्टी के विधायक मोहितराम केरकेट्टा व सभी कार्यकर्ताओं को कार्यक्रम की सफ्लता के लिए बधाई दी। इस मौके पर कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा किसानों, युवाओंए महिलाओं के लिए किए जा रहे कार्यों को जन-जन तक पंहुचाएं। और आगामी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी के जीत का परचम फ्रि से लहराना है।

संक्षिप्त समाचार

स्वच्छता ही सेवा : श्रमदान किया स्मृति वन में

कोरबा(विश्व परिवार)। स्वच्छता ही सेवा: एक तारीख. एक घंटा अभियान अंतर्गत आज नगर पालिक निगम कोरबा अंतर्गत वार्ड क्रमांक 21 स्मृति वन में श्रमदान किया गया। महापौर राजकिशोर प्रसादए सभापति श्यामसुंदर सोनी सहित क्षेत्र के वरिष्ठ नागरिकए आमजन और अधिकारियों ने हाथ में झाड़ू लेकर कचरों की सफाई की। महापौर श्री प्रसाद ने इस अवसर पर कहा कि कल 2 अक्टूबर को महात्मा गाँधी की जयंती है। उन्होंने स्वच्छता को अपनाने के साथ स्वच्छ भारत की कल्पना की थी। सभी नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक रहना चाहिए और श्रमदान कर अपने परिसर को स्वच्छ बनाने में भागीदारी देना चाहिए। अपर आयुक्त खजांची कुम्हार ने बताया कि नगर निगम के सभी वार्डों में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्वच्छता ही सेवा अंतर्गत श्रमदान कर ग्रामीणों और जनप्रतिनिधियों द्वारा अपनी भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है। कलेक्टर सौरभ कुमार ने सभी आमनागरिकों से अपील की है कि वे स्वच्छता को अपनाने के साथ स्वस्थ रहने के लिए अपने आसपास को साफसुथरा रखे। जिले के शैक्षणिक संस्थानों में स्काउट गाइड और एनएसएस इकाईयों ने कार्यक्रम किये।

लापता व्यवसायी की तलाश जारी

कोरबा(विश्व परिवार)। कुसमुंडा के गेवरा बस्ती क्षेत्र में रहने वाले व्यावसायिक अशोक जायसवाल पिछली शाम से लापता है। शिवम इलेक्ट्रॉनिक्स नामक दुकान का संचालन करने वाले जायसवाल के घर नहीं आने को लेकर परिजन चिंतित हुए और उन्होंने पुलिस को जानकारी दी। मामले में संज्ञान लेने के साथ पुलिस के द्वारा जांच की जा रही है आज दोपहर मिली एक सूचना पर कुसमुंडा थाना प्रभारी कृष्ण कुमार वर्मा अपनी टीम के साथ ट्रांसपोर्ट नगर क्षेत्र पहुंचे और यहां वहां कुछ चिकनों पर तलाश की।

बालिका की संदिग्ध मौत

कोरबा(विश्व परिवार)। रजगामार निवासी 7 वर्षीय बालिका की अचानक हालत देर रात को बिगडऩे पर कोरबा जिला अस्पताल लाया गया। यहां परीक्षण उपरांत आपातकालीन ड्यूटी में पदस्थ चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। रजगामार चौकी क्षेत्रांतर्गत रजगामार बस्ती निवासी रामपाल की 7 वर्षीय पुत्री कुमारी रचना की हालत देर रात 1 बजे के लगभग अचानक खराब हो गई। उसके शरीर में बेचैनी की हालत होने तथा उसके द्वारा लगातार चीखने.चिल्लाए जाने एवं उल्टी करने के कारण परिवार के सदस्य घबरा गए। बताया जाता है कि उक्त बालिका की हालत को ज्यादा बिगडऩे पर तत्काल परिजन उसे वाहन से लेकर कोरबा जिला अस्पताल पहुंचे।

जिले में डेंगू के मिले 26 मरीज

कोरबा(विश्व परिवार)। औद्योगिक जिला कोरबा में अब तक डेंगू के 26 मरीज मिल चुके हैं। स्वास्थ्य विभाग ने स्थिति से निपटने के लिए नगर निगम के साथ बैठक की। इसमें विशेष अभियान चलाने की कार्य योजना तय की गई। साथ ही लोगों से अपील की गई है कि अपने आसपास में कहीं भी पानी का जमाव न होने दें। मलेरिया और डेंगू के मामले हर वर्ष बारिश के मौसम में सामने आते हैं। मच्छरों के जरिए फैलने वाली यह बीमारी कई मामलों में लोगों की मौत का कारण बन जाती है। स्वास्थ्य विभाग ने नगर निगम के साथ एक बैठक की। इसमें कई बिंदुओं पर विचार करने के साथ जरूरी निर्णय लिए गए। जिले में अब तक डेंगू के 26 मामले आए हैं। इनमें से 6 मामले एसईसीएल क्षेत्र से संबंधित है। इसलिए हर तरफसफाई पर विशेष जोर देने को कहा गया है। डॉक्टरों ने बताया कि इस प्रकार की बीमारियां मुख्य रूप से पानी का जमाव होने के कारण होती है। जरूरत इस बात की है कि लोग हर कहीं सफाई रखेंए मच्छरों का लार्वा उत्पन्न न होने दें।

ट्रेलर और बोलेरो में टक्कर दो सगे भाई की मौत

कोरबा(विश्व परिवार)। कटघोरा-अम्बिकापुर नेशनल हाईवे 130 पर आज सुबह तानाखार पेट्रोल पंप के पास सड़क हादसा हो गया। जहां ट्रेलर और बोलेरो के बीच टक्कर हो गई। टक्कर इतनी जोरदार रही कि बोलेरो के परखच्चे उड़ गए। हादसे में बोलेरो चला रहे युवक और साथ बैठे उसके भाई की मौके पर मौत हो गई। दूसरी ओर ट्रेलर की चपेट में आने से एक मवेशी की भी मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही कटघोरा व बांगो थाना से पुलिस टीम मौके पर पहुंची। जहां मृतको के शव क्षतिग्रस्त बोलेरो में फंसे हुए थे। पुलिस और डायल 112 की टीम ने रेस्क्यू करते हुए शवों को बाहर निकाला।

सांसद श्रीमती ज्योत्सना महंत ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान अंतर्गत जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

कोरबा(विश्व परिवार)। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना अंतर्गत बाल लिंगानुपात में सुधार व बालिकाओं के प्रति लोगों की मानसिकता परिवर्तन करने के लिए सांसद लोकसभा क्षेत्र कोरबा श्रीमती ज्योत्सना चरण दास महंत ने जिला कार्यालय में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना जिले के समस्त ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में बेटियों के प्रति नकारात्मक सोच को बदलने एवं बेटियों को बचाने, बेटियों को पढ़ाने एवं आगे बढ़ाने में सेतु का कार्य करेगा। इस कार्यक्रम अन्तर्गत प्रचार रथ बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं से संबंधित संदेशों व बालक-बालिका संरक्षण से संबंधित अधिनियमों कानूनों प्रचार प्रसार जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रो में भ्रमण करते हुए किया जाएगा। साथ ही लिंगभेद से संबंधित कुरीतियों को रोकने संबंधी जानकारी भी उन्हें दी जाएगी। गौरतलब है कि भारत सरकार की बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना अंतर्गत बाल लिंगानुपात में सुधार तथा बालिकाओं के प्रति लोगों की मानसिकता परिवर्तन करने के लिए लागू ही गई है। इस हेतु जिले में आज 5 प्रचार रथ का सांसद द्वारा रवाना किया गया। यह प्रचार रथ जिले के सभी जनपदों में घूमकर ग्रामीणों में जागरूकता लाने का कार्य करेगा। इस अवसर पर विधायक कटघोरा श्री पुरूषोत्तम कंवर, विधायक पाली तानाखार श्री मोहित राम केरकेट्टा, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती शिवकला कंवर, खाद्य आयोग के सदस्य श्री हरीश परसाई, कलेक्टर श्री सौरभ कुमार, अपर कलेक्टर श्री प्रदीप साहू, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला व बाल विकास श्रीमती प्रीति खोखर चखियार सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

टेबल टेनिस संघ की प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य बनीं डा.मंजुला

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले की वरिष्ठ चिकित्सक डा मंजुला साहू को छत्तीसगढ़ टेबल टेनिस संघ में प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य नियुक्त किया गया है। उन्हें वर्ष 2023 से वर्ष 2027 तक के लिए गठित संघ के माध्यम से प्रदेश में टेबल टेनिस से संबंधित खेल गतिविधियों को नई दिशा प्रदान करने अहम अहम जिम्मेदारी सौंपी गई है। वर्तमान में वह जिला टेबल टेनिस संघ के कोषाध्यक्ष पद की कमान संभाल रहीं। छत्तीसगढ़ टेबल टेनिस संघ की वार्षिक आम सभा की बैठक प्रदेश की राजधानी रायपुर में 30 सितंबर आयोजित की गई। यह बैठक होटल लैंडमार्क पंडरी में आयोजित की गई थी। इस संबंध में छत्तीसगढ़ टेबल टेनिस संघ के सचिव की ओर से सूचना जारी करते हुए संघ की कार्यकारिणी सदस्य एवं सीएसईबी कोरबा पश्चिम की वरिष्ठ चिकित्सक डा मंजुला साहू को भी आमंत्रित किया गया था। वर्तमान में डॉ मंजुला साहू जिला टेबल टेनिस संघ कोरबा के कोषाध्यक्ष का दायित्व संभाल रही हैं। उन्होंने बताया कि इस बैठक में वर्ष 2022-23 में हुई खेल प्रतियोगिताओं और गतिविधियों का लेखा जोखा पेश किया गया। साथ ही वर्ष 2023-24 के खेल कैलेंडर के अनुसार आयोजित होने वाली गतिविधियों की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए उनके सफ्ल आयोजन को लेकर विचार विमर्श और सुझावों का आदान प्रदान भी किया गया।

कोरबा की बेटी जयश्री नायर संगीत प्रस्तुति के लिए करेगी यूरोप की यात्रा

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा की बेटी जयश्री नायर आने वाले तीन माह के लिए यूरोप यात्रा पर रहेंगी। जहां वह सात से नौ देशों में भारतीय संगीत की अलग-अलग विधाओं का प्रस्तुतीकरण करेंगी। जिसमें शास्त्रीय संगीत के अलावा गज़ल भजन आदि होंगे। जर्मनी, निदरलैंड्स, स्वीडन, बेल्जियम,स्विजरलैंड इत्यादि देशों में अपने भारतीय संगीत ग्रुप अनुभूति ग्रुप के साथ प्रस्तुति देंगी। जयश्री चार साल की उम्र से ही शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ले रही है। अब खुद एक गुरु के रूप में अपनी संगीत संस्था जयश्री म्यूजिक एकेडमी का संचालन करती हैं। जहां वह बहुत से संगीत के विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा देतीं हैं। साथ ही उन्होंने आनलाइन गुरु के रूप में भी अपनी पहचान है और अलग-अलग देशों में संगीत के शिक्षा दे रहीं हैं। अपनी बड़ी उपलब्धियां का श्रेय जयश्री अपने गुरु स्वर्गीय अमिताभ गुप्ता को अपनी माता रुक्मणी नायर को देतीं है। जिनके मार्गदर्शन से वह संगीत की ऊंचाइयां छू रही है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ ही नहीं भारत का गौरव बढ़ा रहीं हैं। जय श्री पद्म भूषण तीजन बाई जी से बहुत ही प्रभावित है और वह अपनी जन्मभूमि छत्तीसगढ़ के लोक संगीत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गाने की चाह रखती है। उनका मानना है कि छत्तीसगढ़ का संगीत बहुत ही अलग और मिट्टी की खुशबू की तरह है जिसे दुनिया को सुनना चाहिए। जयश्री रागी द गर्ल बैंड का संचालन कर रही हैं, जिसमें सिर्फ लड़कियां हैं और यह लड़कियां राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुतियां दे चुकी हैं। महिलाओं का निडर होकर संगीत के क्षेत्र में आगे बढ़ना यही रागी द गर्ल बैंड का उद्देश्य है। जयश्री राष्ट्रीय संगीत गुरु, कला रत्न, लोक कला वारिधि, अवार्ड आफ द स्कालरशिप भारत संस्कृति मंत्रालय, जैसे संतावन राज्य व राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त कर चुकी हैं ।

सरकारी कर्मचारियों की जगह कांग्रेसी भरवा रहे पट्टा का फॉर्म, भाजपा ने जताई आपत्ति

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा नगर पालिक निगम के भाजपा पार्षद दल ने कांग्रेसियों द्वारा पट्टा फॉर्म भरवाने पर आपत्ति दर्ज कराते हुए कलेक्टर से शिकायत करते हुए तत्काल रोक लगाने आवेदन सौपा है रितु चौरसिया ने बताया कि यह एक सरकारी कार्यक्रम है जिसमें निगम के सरकारी व्यक्ति द्वारा ही पट्टा फॉर्म भरवारा जाना चाहिए लेकिन कांग्रेसियों द्वारा पट्टा फॉर्म भरवारा जा रहा है जिसे कांग्रेसीकरण करण करते हुए आगामी विधानसभा चुनाव में वोटो की राजनीति और लाभ लेने की कोशिश की जा रही है। भाजपा पार्षद दल द्वारा दिए ज्ञापन में बताया गया है कि कोरबा नगर निगम क्षेत्र अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर पट्टा वितरण का कार्य प्रगति पर है नगर निगम के 67 वार्ड में से 30 वार्ड में भाजपा के पार्षद हैं जिन वार्डों में भाजपा के पार्षद हैं वहां पर उनकी उपेक्षा करते हुए पट्टा वितरण सरकारी कार्यक्रम को कांग्रेसीकरण किया जा रहा है पट्टा वितरण हेतु फॉर्म भरने का कार्य कांग्रेसियों के द्वारा या कांग्रेस प्रत्याशी के द्वारा या पूर्व कांग्रेस पार्षद के द्वारा कराया जा रहा है और उनके अनुमोदन से ही अधिकारियों के द्वारा पट्टा में हस्ताक्षर करके उनके हाथों पट्टा का वितरण किया जा रहा है।

दिए गए निर्देशों पर शीघ्रता से पालन सुनिश्चित करें : सांसद ज्योत्सना महंत

दिशा समिति की बैठक संपन्न

कोरबा(विश्व परिवार)। जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक लोकसभा सांसद श्रीमती ज्योत्सना चरणदास महंत की अध्यक्षता में जिला पंचायत सभाकक्ष में आयोजित की गई। बैठक में सांसद श्रीमती महंत ने निर्देशित किया कि जिले में शासन की योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित हो और योजनाओं से हितग्राहियों को लाभान्वित किया जाएं। उन्होंने जिले के दूरस्थ इलाकों में स्वास्थ्य, विद्युत और शिक्षा जैसी सुविधाओं को और बेहतर बनाने की दिशा में कदम उठाने हेतु निर्देश दिए। उन्होंने दूरस्थ क्षेत्र के स्कूलों में आवश्यकतानुसार शिक्षकों की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। सांसद ने सिकलसेल की जांच करने, एनीमिया पीड़ित महिलाओं को पोषण आहार प्रदान करने, स्कूलों में बच्चों को गर्म एवं गुणवत्तापूर्ण मध्यान्ह भोजन देने, दिव्यांगजनों को पात्रतानुसार दिव्यांग प्रमाण पत्र बनाने, स्कूलों में विद्यार्थियों के बैठने हेतु टाटपट्टी उपलब्ध कराने के भी निर्देश दिए। इस दौरान कलेक्टर श्री सौरभ कुमार ने दिए गए निर्देशों का पालन करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। दिशा समिति की विगत बैठक में सांसद श्रीमती महंत ने पूर्व बैठकों में दिए गए निर्देशों के पालन प्रतिवेदन की समीक्षा की। सांसद श्रीमती महंत ने कोरबा जिले में मनरेगा के कार्यों की जानकारी ली और जनप्रतिनिधियों से क्षेत्र में आवश्यकतानुसार कार्यों का प्रस्ताव प्रस्तुत करने कहा। उन्होंने मनरेगा अंतर्गत कार्यों को समय पर कार्य पूरा करने के साथ समय पर मजदूरी भुगतान के निर्देश दिए। सांसद ने राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास ग्रामीण योजना, जल जीवन मिशन के कार्यों की जानकारी तथा जिले में कराएं गए कार्यों की सूची जनप्रतिनिधियों को उपलब्ध कराने कहा। सांसद ने स्वास्थ्य विभाग अंतर्गत मातृत्व स्वास्थ्य, शिशु स्वास्थ्य, परिवार कल्याण कार्यक्रम राष्ट्रीय क्षय नियंत्रण कार्यक्रम, राष्ट्रीय कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम, आयुष्मान भारत योजना सहित अन्य योजनाओं की जानकारी ली और दूरस्थ क्षेत्रों में चिकित्सक तथा मरीजों के उपचार के लिए आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में सांसद श्रीमती महंत ने विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं और कार्यक्रमों सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना, रूरबन मिशन, राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजना, एकीकृत बाल विकास योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, भू-अभिलेख आधुनिकीकरण, दीनदयाल उपाध्याय विद्युतीकरण योजना, प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना, स्कूल शिक्षा विभाग, जिला व्यापार एवं उद्योग, सांख्यिकी विभाग, नगर पालिक निगम अंतर्गत संचालित आवास एवं पेयजल तथा स्वच्छता से जुड़ी योजनाओं की समीक्षा की और अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर, मंगलवार 03 अक्टूबर 2023

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

अमेरिका खेलेगा कश्मीर कार्ड?

उचित ही यह सवाल उठाया गया है कि डॉनल्ड ब्लोम का पीओके जाना और उस क्षेत्र को पाकिस्तान की भाषा के अनुकूल संबोधित करना क्या कोई सामान्य घटना है, या इसके जरिए अमेरिका ने भारत को कोई संदेश देने की कोशिश की है? भारत में अमेरिका के राजदूत एरिक गार्सेटी ने कश्मीर मसले पर टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि इस विवाद को भारत और पाकिस्तान को आपस में हल करना है। गार्सेटी से यह सवाल पाकिस्तान स्थित अमेरिकी राजदूत डॉनल्ड ब्लोम की पाकिस्तान कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) की यात्रा के सिलसिले में पूछा गया था। ब्लोम ने अपने इस दौरे के समय उस इलाके को 'आजाद जम्मू एवं कश्मीर' कह कर संबोधित किया। कूटनीतिक हलकों में उचित ही यह सवाल उठाया गया है कि ब्लोम का पीओके जाना और उस क्षेत्र को पाकिस्तान की भाषा के अनुकूल संबोधित करना क्या कोई सामान्य घटना है, या इसके जरिए अमेरिका ने भारत को कोई संदेश देने की कोशिश की है? उधर गार्सेटी का इसे द्विपक्षीय विवाद बताना भी क्या उसी संदेश का हिस्सा है। कम-से-कम भारत की वर्तमान सरकार यह नहीं मानती कि इस विवाद को हल करने में पाकिस्तान की कोई भूमिका है। जहां तक विवाद का प्रश्न है, तो वह सिर्फ पीओके पर है। जबकि अमेरिकी राजदूतों ने जिस रूप में कश्मीर विवाद का जिक्र किया, उससे नहीं लगता कि उन्होंने भारत के रुख का समर्थन किया हो। घटनाओं का महत्त्व उसके संदर्भ से जुड़ा होता है। कनाडा के साथ भारत के बढ़े विवाद के क्रम में भारत और पश्चिमी देश आमने-सामने खड़े होते नजर आ रहे हैं। अचानक भारत को लेकर अमेरिकी और ब्रिटिश अखबारों की भाषा तल्ख हो गई है। उनमें भारत को याद दिलाया जाने लगा है कि उसकी उतनी ताकत नहीं है, जितना वह समझ रहा है। यह भी कहा गया है कि भारत के साथ रिश्ता गहरा करने पर जो द्विपक्षीय सहमति अमेरिका में रही है, उसमें अब दरार पड़ सकती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की राजनीति और उनकी सरकार की अनेक घरेलू नीतियों को लेकर वहां आलोचनात्मक स्वर तीखे हो गए हैं। इस तरह संदेश देने को कोशिश की जा रही है कि पश्चिम की चीन को घेरने की मजबूरी के मद्देनजर भारत यह ना माने कि वह पश्चिमी हितों का खुला उल्लंघन कर सकता है। स्पष्टत: यह पश्चिमी रुख भारतीय विदेश नीति के सामने एक नई चुनौती बन कर आया है।

मेडिकल पढ़ाई की गुणवत्ता क्या रह गई?

अजीत द्विवेदी

हालांकि अपनी सुविधा के लिए इसे कोरोना महामारी से जोड़ दिया जाता है। कहा जाता है कि महामारी के स्कूल-कॉलेज बंद हो गए थे और पठन-पाठन का वैकल्पिक यानी ऑनलाइन सिस्टम अपनाया गया था, जिससे लर्निंग प्रोसेस पर व्यापक असर हुआ। लेकिन यह अकेला कारण नहीं है, बल्कि कई कारणों में से एक कारण है। बहरहाल, शिक्षा के स्तर में गिरावट का एक बड़ा नमूना अभी देखने को मिला है, जब नेशनल मेडिकल कौंसिल यानी एनएमसी ने मेडिकल के पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स यानी विशेषज्ञता वाली चिकित्सा शिक्षा के लिए दाखिले का कटऑफ मार्क्स शून्य कर दिया। यानी एमबीबीएस पास करने वाले जो डॉक्टर इससे आगे की उच्च शिक्षा हासिल करना चाहते हैं और किसी खास विषय का विशेषज्ञ बनना चाहते हैं उनको अगर नीट की पीजी परीक्षा में शून्य अंक आया है तब भी वे पीजी में दाखिला ले सकेंगे। इतना ही नहीं 13 छात्र ऐसे हैं, जिनको शून्य से भी कम अंक मिले हैं। उनके मार्क्स निगेटिव में हैं फिर भी वे विशेषज्ञ बनने की पढ़ाई के लिए पीजी कोर्स में दाखिला ले सकेंगे। सोचें, यह कैसी हैरान करने वाली और कितनी दुखद बात है! शून्य या माइनस मार्क्स वाले जिन छात्रों को पीसी कोर्स में दाखिला दिया जाना है वे ऐसे छात्र हैं, जिन्होंने चार या पांच साल तक मेडिकल की पढ़ाई की है। मेडिकल का कोर्स पूरा करने के बाद उनका स्तर यह है कि वे पीजी कोर्स में दाखिले की परीक्षा में एक भी अंक हासिल नहीं कर पाए तो फिर उनकी एमबीबीएस की पढ़ाई का क्या मतलब है? नीटी पीजी की परीक्षा में शून्य या माइनस मार्क्स हासिल करने वाले छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए दाखिला देने की बजाय इस बात की जांच की जानी चाहिए कि ऐसे डॉक्टरों ने किस मेडिकल कॉलेज से पढ़ाई की है। उस मेडिकल कॉलेज की पूरी फैकल्टी की जांच की जानी चाहिए और उसका पंजीयन रद्द किया जाना चाहिए। यह कोई मामूली बात नहीं है कि चार-पांच साल तक एमबीबीएस की पढ़ाई करके डॉक्टर बनने वाले लोग पीजी कोर्स में दाखिले के लिए होने वाली प्रवेश परीक्षा में एक भी अंक नहीं हासिल कर पाएं। ऐसे डॉक्टर किस तरह से लोगों का इलाज करेंगे? क्या उनको डॉक्टर बनाना आम लोगों की जान से खिलवाड़ नहीं है? यह सही है कि देश में आबादी के अनुपात में डॉक्टरों की संख्या बहुत कम है लेकिन क्या इसके लिए नीम हकीम डॉक्टर बना कर बाजार में उतार दिया जाएगा? क्या एनएमसी ने नीम हकीम खतरा ए जान का मुहावरा नहीं सुना है? मेडिकल में दाखिले के लिए पहले से चल रही तमाम प्रवेश परीक्षाओं या प्रक्रिया को खत्म करके 2017 में नीट को अपनाया गया था। उसके बाद से पहली बार ऐसा हुआ है कि पीजी कोर्स में दाखिले के लिए कटऑफ जीरो या माइनस में किया गया है। अगर ऐसा नहीं किया जाता तो पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स की 13 हजार से ज्यादा सीटें खाली रह जातीं। देश में पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स यानी अलग अलग क्षेत्र की विशेषज्ञता की पढ़ाई के लिए कुल 68 हजार सीटें हैं। इन 68 हजार सीटों पर दाखिले के लिए एमबीबीएस कर चुके करीब सवा दो लाख डॉक्टरों ने परीक्षा दी थी। इनमें से सिर्फ 55 हजार डॉक्टर पीजी कोर्स में दाखिले के लिए तय किया गया कटऑफ मार्क्स हासिल कर सके। बाकी करीब पौने दो लाख डॉक्टरों के बारे में सोचें, जो दाखिला परीक्षा का कटऑफ मार्क्स नहीं हासिल कर सके! इस बार खाली रह गई सीटों को भरने के लिए उन सबको छूट दे दी गई है कि वे काउंसिलिंग में शामिल हों। अब इससे जुड़े दूसरे पहलू को देखें। चूंकि नेशनल मेडिकल कौंसिल ने नीट पीजी की परीक्षा में शामिल हुए सभी एमबीबीएस डॉक्टरों को काउंसिलिंग में शामिल होने का मौका दे दिया है तो पीजी कोर्स में किसका दाखिला होगा? अगर सरकारी मेडिकल कॉलेजों को छोड़ें तो यह तय मानें कि तमाम निजी मेडिकल कॉलेजों में पीजी कोर्स में दाखिला उनका होगा, जो अनाप-शनाप पैसा खर्च करने में सक्षम होंगे। सरकारी कॉलेजों में पीजी की पढ़ाई की फीस बहुत कम है। 50 हजार रुपए सालाना से भी कम फीस वाले कॉलेज हैं लेकिन निजी मेडिकल कॉलेजों में एक साल की फीस एक-एक करोड़ रुपए तक है। सो, ऐसे डॉक्टर, जिनको प्रवेश परीक्षा में जीरो या माइनस में मार्क्स हैं वे आसानी से ज्यादा पैसा खर्च करके पीजी की सीट हासिल कर लेंगे। अब सवाल है कि आगे विशेषज्ञ डॉक्टर की डिग्री हासिल करके ऐसे लोग क्या करेंगे? महंगी फीस लेकर इलाज करेंगे लेकिन क्या उनके इलाज पर भरोसा किया जा सकेगा? सरकार ने एमबीबीएस की डिग्री हासिल करने वाले डॉक्टरों के लिए एक एक्जिट एक्जाम का प्रावधान किया है। इसके तहत हर डॉक्टर के लिए प्रैक्टिस करने से पहले यह परीक्षा पास करना अनिवार्य किया गया है। इसे नेक्स्ट यानी नेशनल एक्जिट टेस्ट नाम दिया गया है। हैरानी की बात है कि एमबीबीएस की पढ़ाई करने, डिग्री लेने और नेशनल एक्जिट टेस्ट पास करने के बाद भी अगर डॉक्टर नीट पीजी में एक भी अंक हासिल नहीं कर पाएं तो क्या उनको मेडिकल प्रैक्टिस की इजाजत दी जानी चाहिए? जीरो या निगेटिव मार्क्स पर भी दाखिले का बचाव करते हुए कुछ जानकार बता रहे हैं कि पहले जब पीजी कोर्स में दाखिले की परीक्षा नहीं होती थी तब एमबीबीएस पास करने वाले हर डॉक्टर को पीजी में दाखिले के लिए योग्य समझा जाता था। उसी तरह इस बार भी एमबीबीएस पास करने वाले हर डॉक्टर को पीजी के लिए योग्य माना गया है। लेकिन क्या यह आंखों देखी मक्खी निगलने का काम नहीं है?

पाकिस्तान से बातचीत का सवाल....

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

पिछली बार बातचीत करने के लिए नेहरू ने शेख मोहम्मद अब्दुल्ला को भेजा था, इस बार उन्हीं के पुत्र और पौत्र फारूक अब्दुल्ला और उमर अब्दुल्ला को भेजा जा सकता है। इतना ही बातचीत का एजेंडा उन्हें स्पष्ट रहना चाहिए शेख मोहम्मद अब्दुल्ला को 1964 में जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर पाकिस्तान से गोलमेज कान्फ्रेंस करने के लिए पाकिस्तान भेजा था। इसकी चर्चा यथास्थान की जाएगी। अब श्रीनगर की जामिया मस्जिद के मीरवाइज सैयद उमर फारूक ने आग्रह किया है कि कश्मीर के मसले पर पाकिस्तान से बातचीत कर लेनी चाहिए। वे काफी लम्बे अरसे बाद 22 सितम्बर 2023 को मस्जिद में आए थे। वे इस मस्जिद से अपने भक्तों को प्राय: सम्बोधित करते रहते हैं और उन्हें दिशा निर्देश भी देते रहते हैं। मीर का अर्थ मुख्य होता है जिसे अंग्रेजी में चीफ भी कह सकते हैं। वाइज का अर्थ प्रचारक है। लेकिन यहां प्रचारक का अर्थ इस्लाम का प्रचारक है। मीरवाइज यानी इस्लाम का मुख्य प्रचारक। मीरवाइज मस्जिद में मुसलमान बच्चों को मजहब की शिक्षा भी देते हैं। लेकिन पिछले आठ नौ दशकों में उन्होंने कश्मीर की राजनीति में भी सक्रिय भूमिका निभानी शुरू कर दी है। 1931 में मुस्लिम कान्फ्रेंस की स्थापना में भी एक मीरवाइज का ही हाथ था। श्रीनगर में दो मीरवाइज हैं। एक तो जामिया मस्जिद के मीरवाइज हैं और दूसरे खानगाहे मौला के मीरवाइज हैं। उन्हें मीरवाइज हमदानी भी कहा जाता है। लेकिन इन दोनों मीरवाइजों के पूर्वज सैयद अली हमदानी हैं। हमदानी ईरान में तैमूरलंग के सताए हुए थे। उसी के डर से वे भागकर कश्मीर आ गए थे। लेकिन अब सैयद अली हमदानी की संतानें दो भागों में बंट चुकी हैं। एक जामिया मस्जिद में मीरवाइज है और दूसरा खानगाहे मौला में मीरवाइज है। इतना लम्बा कालखंड गुजर जाने के कारण, अब ये परस्पर विरोधी ही नहीं हैं, बल्कि कई बार इनके भक्त आपस में मारपीट भी करते हैं। ये दोनों मीरवाइज मुसलमानों की अशरफ एटीएम श्रेणी से आते हैं। मुसलमानों की अशरफया एटीएम श्रेणी में अरब, तुर्क व मुगल मंगोल मूल के मुसलमान आते हैं। कश्मीर विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष रहे स्व. बशीर अहमद डाबला इन्हें मुस्लिम्ज ऑफ फारेन ओरिजन कहते हैं। कश्मीर में मुसलमानों का दूसरा बहुत बड़ा समूह डीएम या देसी मुसलमानों का है। ये स्थानीय लोग हैं जो पिछले छह सौ सालों में किन्हीं भी कारणों से अपनी विरासत छोड़ कर इस्लाम पंथ में चले गए थे। पिछले दिनों जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद ने यह बात कही भी थी। आजाद देसी मुसलमानों की जमात से ताल्लुक रखते हैं। अशरफ मुसलमान देसी मुसलमानों को अलजाफपसमांदा, अरजाल न जाने क्या क्या कहते हैं। कश्मीर घाटी में मीरवाइजों को एटीएम/अशरफ मूल के मुसलमानों का नेता भी माना जाता है। एटीएम और डीएम में प्राय: झगड़ा भी होता रहता है। कई बार तो झगड़ा जरूरत से ज्यादा भी बढ़ जाता है। कई दशक पहले झगड़ा उतना बढ़ गया था कि कश्मीर के देसी मुसलमानों ने स्वयं को शेर और मीरवाइज के अशरफ मुसलमानों को बकरा कहना शुरू कर दिया था। परोक्ष रूप से शेर-बकरा का यह झगड़ा किसी न किसी रूप में आज तक चला हुआ है। 1947 में जामिया मस्जिद के मीरवाइज मोहम्मद यूसुफ शाह भाग कर पाकिस्तान चले गए थे। पाकिस्तान सरकार ने उन्हें तथाकथित आजाद कश्मीर का राज्यपाल भी बनाए रखा। उस वक्त कश्मीर के देसी मुसलमानों ने आवाज भी उठाई थी कि अब मीरवाइज का पद किसी देसी मुसलमान को मिलना चाहिए। लेकिन यह पद आज तक परम्परागत ही चला आ रहा है। वर्तमान मीरवाइज सैयद उमर फारूक के पिता को आतंकवादियों ने गोली से उड़ा दिया था। वे वैसे तो आतंकवादियों की बोली ही बोलते थे, लेकिन बीच में उन्होंने पाकिस्तान द्वारा निर्धारित रास्ते से एक दो कदम अलग से चलने की कोशिश की थी, जिसका खमियाजा उन्हें भुगतना पड़ा। उमर फारूक लम्बे अन्तराल के बाद 22 सितम्बर 2023 को जामा मस्जिद में अपने श्रद्धालुओं के बीच पहुंचे थे। रिकार्ड के लिए वे अभी भी तथाकथित हुर्रियत कान्फ्रेंस के अध्यक्ष हैं। वहां उन्होंने कश्मीर की आजकल की राजनीति को लेकर भी सुझाव दिए। उनका मानना था कि कश्मीरी हिन्दू वापस कश्मीर में आ सकें, इसके लिए माहौल बनाना चाहिए। उनका कहना था कि कश्मीर को लेकर पाकिस्तान से बात करनी चाहिए। ऐसा सुझाव पिछले दिनों फारूक अब्दुल्ला और उनके सुपुत्र उमर अब्दुल्ला भी दे चुके हैं। यहां तक कि पीडीपी की अध्यक्षा सैयदा महबूबा मुफ्ती भी यही बात कह चुकी हैं। इन लोगों का यह सुझाव सचमुच काम का है और ये लोग इसमें महत्वपूर्ण भूमिका भी निभा सकते हैं। जम्मू कश्मीर व लद्दाख का बहुत बड़ा हिस्सा पाकिस्तान ने बलपूर्वक अपने कब्जे में रखा हुआ है। उसको लेकर पाकिस्तान से तीन लड़ाइयां भी हो चुकी हैं। लेकिन उसके बावजूद जम्मू कश्मीर व लद्दाख का वह हिस्सा मुक्त नहीं करवाया जा सका। सभी मानते हैं कि लड़ाई की बजाय शान्ति से मसलों का हल होना चाहिए। यदि पाकिस्तान बलपूर्वक कब्जाए गए। हिस्से शान्तिपूर्ण तरीके से छोड़ दे तो मसले का इससे बेहतर क्या हल हो सकता है? लड़ाई के मैदान में जाने की बजाय मेज पर बैठ कर पाकिस्तान से इस विषय पर बातचीत कर लेनी चाहिए कि वह प्रदेश के कब्जाए गए हिस्से पर कब्जा कब छोड़ेगा। लेकिन पाकिस्तान से बातचीत करने से पहले वार्ताकारों को स्वयं कम से कम दो तथ्य स्पष्ट होने चाहिए। पहला तो यह कि पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर और लद्दाख के कुछ हिस्से पर 1947 से कब्जा किया हुआ है। दूसरा यह कि पाकिस्तान से बातचीत करते समय एजेंडा क्या होना चाहिए। जहां तक पहले तथ्य का सवाल है, तो मीरवाइज, सैयदा महबूबा मुफ्ती, फारूक अब्दुल्ला व उमर अब्दुल्ला इतना तो जानते ही होंगे कि पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर और लद्दाख के कुछ हिस्सों पर कब्जा किया हुआ है। मीरवाइज के पितामह पाकिस्तान में जाकर तथाकथित आजाद कश्मीर के सदर हो गए थे। अब्दुल्ला और मुफ्ती प्रदेश के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। प्रदेश के मानचित्र से ही पता चल गया होगा कि पाकिस्तान ने कितना हिस्सा हड़पा हुआ है। दूसरा प्रश्न है बातचीत के एजेंडे का। यह एजेंडा भारत की संसद ने दशकों पहले नियत कर दिया था। संसद ने प्रस्ताव पारित किया हुआ है, जिसमें मुफ्ती और अब्दुल्ला दोनों परिवारों की हिस्सेदारी है, कि पाकिस्तान से कब्जाया गया जम्मू कश्मीर का हिस्सा उससे मुक्त करवाना है। ऐसा नहीं कि भारत ने कश्मीर को लेकर इससे पहले पाकिस्तान से बातचीत का प्रयास नहीं किया। फारूक अब्दुल्ला तो जानते ही हैं कि 1964 में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने उनके पिता मरहूम शेख मोहम्मद अब्दुल्ला को बातचीत के लिए पाकिस्तान भेजा था। लेकिन तब भारत ने देशी विदेशी शक्तियों के दबाव या बहकाने में आकर अपने एजेंडे में परिवर्तन कर लिया था। यह परिवर्तन था कि जम्मू कश्मीर का जितना हिस्सा पाकिस्तान के पास है, वह उसी के पास रहने दिया जाए।

विचार

यही सोच समस्या है

प्रश्न है कि उन 19 थाना क्षेत्रों को क्यों छोड़ दिया गया? एक अंग्रेजी अखबार में छपी रिपोर्ट के मुताबिक पिछले लगभग पांच महीनों में मणिपुर में हुई हिंसा की तमाम घटनाओं के बीच तकरीबन 80 फीसदी वारदात उन्हीं थाना क्षेत्रों में हुई हैं। मणिपुर में बेकाबू हालात के बीच 19 थाना क्षेत्रों को छोड़ कर बाकी पूरे राज्य को अशांत क्षेत्र घोषित किया गया है। यानी वहां सशस्त्र बल (विशेष अधिकार) कानून लागू हो गया है। प्रश्न है कि उन 19 थाना क्षेत्रों को क्यों छोड़ दिया गया? एक अंग्रेजी अखबार में छपी रिपोर्ट के मुताबिक पिछले लगभग पांच महीनों में मणिपुर में हुई हिंसा की तमाम घटनाओं के बीच तकरीबन 80 फीसदी वारदात उन्हीं थाना क्षेत्रों में हुई हैं। मगर इन क्षेत्रों को इसलिए बख्शा गया, क्योंकि वहां बहुसंख्यक मैतई आबादी रहती है। जबकि जिन क्षेत्रों में अफ्सपा लागू किया गया है, वे पहाड़ी इलाके हैं, जहां ज्यादतर कुकी आबादी ज्यादा है। इस संदर्भ में यह पहलू रेखांकित करने का है कि हिंसा की इस लंबी अवधि में राज्य सरकार- खासकर मुख्यमंत्री बीरेन सिंह पर मैतई समुदाय की तरफ से काम करने के आरोप लगते रहे हैं। राज्य प्रशासन पूरी तरह नाकाम रहा है, यह बात अपने ढंग से देश का सर्वोच्च न्यायालय भी कह चुका है। इसके बावजूद उनकी पीठ पर केंद्र सरकार का हाथ बना हुआ है। सरकार में कुकी समुदाय को निशाने पर रखने का नजरिया कितना हावी है, इसकी स्पष्ट मिसाल देखनी हो, तो न्यूयॉर्क में विदेश मंत्री एस जयशंकर के दिए बयान पर गौर करना चाहिए। जयशंकर ने म्यांमार से आए शरणार्थियों को हिंसा का प्रमुख कारण बताया। इस तरह मैतई समुदाय की खुद को जनजाति घोषित कराने की मांग और उससे उपजे तनाव जैसी बुनियादी वजह की उन्होंने पूरी उपेक्षा कर दी। अगर समस्या की जड़ों में और भी गहरे झांका जाए, तो प्रमुख कारण के तौर पर संसाधनों- खासकर जमीन से जुड़ी सुरक्षा का पहलू स्पष्ट नजर आता है। जहां तक आइडेंटी पॉलिटिक्स की बात है, तो उसमें दोनों समुदाय शामिल रहे हैं। हिंदुत्ववादी संगठनों के साथ-साथ चर्च ने भी इस होड़ को बढ़ाने में भूमिका निभाई है। किसी निष्पक्ष सरकार का दायित्व इन विभाजन रेखाओं और उनसे जुड़ी आशंकाओं को दूर करना होता। मगर जब सरकार खुद एक पक्ष बन जाए, तो समस्या का निकलना और दूर हो जाता है। इसीलिए अफ्सपा से भी ज्यादा उम्मीद नहीं बंधी है।

विपक्ष के तो वादे भी छोटे हैं

सोचें, नरेंद्र मोदी ने कहां से शुरुआत की थी। प्रधानमंत्री पद के दावेदार के तौर पर 2014 में मैदान में उतरे तब काले धन का जुमला बोला था और कहा था कि विदेशों में इतना काला धन है कि अगर वापस आ जाए तो हर भारतीय के खाते में 15-15 लाख रुपए आ सकते हैं। इसके जवाब में विपक्षी नेता क्या कह रहे हैं कि जीते तो खातों में दो-दो हजार या तीन-तीन हजार रुपए डालेंगे। सोचें, कहां 15 लाख और कहां तीन हजार रू! दे तो मोदी भी दो- तीन हजार ही दे रहे हैं लेकिन उन्होंने वादा 15 लाख रू का किया था। यहां विपक्ष वादा ही दो-तीन हजार रुपए का का कर रहा है। अदानी-अंबानी से ले कर 25-50 लाख रू का क्यों नहीं कर रहा? मोदी ने किसानों को दी है छह हजार रुपए की सालाना रेवड़ी लेकिन कहा था कि 2022 तक किसानों की आय दोगुनी कर देंगे। इसके जवाब में विपक्षी पार्टियां क्या कह रही हैं? किसानों के लिए उनका क्या वादा है? सिर्फ इतना कि कर्ज माफ कर देंगे। क्या इससे काम चलेगा? किसानों की आय कम से कम चार गुनी कर देना का वादा करना चाहिए। प्रधानमंत्री बनते ही 2014 के दो अक्टूबर को मोदी ने स्वच्छता अभियान शुरू किया और थोड़े दिन के अभियान के बाद घोषित कर दिया कि देश स्वच्छ हो गया और खुले में शौच से मुक्त हो गया। यह अलग बात है कि राजधानी दिल्ली में अहले सुबह बाहर निकल जाइए तो हजारों लोग बोतल में पानी लेकर शौच के लिए जाते दिख जाएंगे। मोदी के स्वच्छता के जवाब में विपक्ष के पास क्या एजेंडा है? मोदी ने हर घर शौचालय देने की बता कही थी तो 'इंडिया' के नेताओं को हर घर में टाइल्स वाले और गीजर लगे बाथरूम देने का वादा करना चाहिए, जिसमें 24 घंटे पानी की सप्लाई हो। बॉलीवुड की बड़ी अभिनेत्री को बुला कर बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का अभियान मोदी ने शुरू किया। लोगों से बेटियों के साथ सेल्फी डालने की अपील की गई। लेकिन हकीकत क्या है? महाकाल की नगरी उज्जैन में 12 साल की खून से लथपथ बेटी आठ किलोमीटर तक चलती रही और एक आदमी मदद के लिए सामने नहीं आया। बलात्कार का शिकार हुई नाबालिग बेटी को मंदिर के एक पुजारी राहुल शर्मा से मदद मिली।

प्रशिक्षक को सही प्रबंधन दो....

भूपिंदर सिंह

क्या हिमाचल सरकार पंजाब, गुजरात आदि राज्यों की तरह उत्कृष्ट खेल परिणाम दिलाने वाले बढिया प्रशिक्षकों को यहां लगातार कई वर्षों के लिए अनुबंधित कर प्रदेश के खिलाडियों को राज्य में ही प्रशिक्षण सुविधा दिला कर पलायन रोक नहीं सकती है? इससे प्रदेश में खेल वातावरण बनेगा तो हर खेल प्रशिक्षक चाहेगा कि उसके शिष्य उत्कृष्ट प्रदर्शन करें आज का अभिभावक खेलों में भी अपने बच्चों का कैरियर देख रहा है, क्योंकि खेल आज अपने आप में एक प्रोफैशन है। मानव द्वारा विज्ञान में बहुत प्रगति कर प्रौद्योगिकी व चिकित्सा के क्षेत्र में नए-नए सफल शोध कर जीवनशैली को काफी आसान व सुविधाजनक बना लिया है, मगर शिक्षण व प्रशिक्षण में शिक्षक व प्रशिक्षक की भूमिका का महत्व आज भी वही है जैसा हजारों साल पहले था। महाभारत में कृष्ण सारथी नहीं होते तो क्या अर्जुन भीष्म, कर्ण व अन्य अजेय महारथियों को हरा पाते। विश्व स्तर पर किसी खेल विशेष में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए क्षमतावान प्रशिक्षक का होना बेहद जरूरी होता है। हमारे यहां खेल प्रशिक्षण के लिए वह वातावरण ही नहीं बन पाया है, जिसमें प्रशिक्षक खिलाड़ी से राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट परिणाम दिला सके। खेल प्रशिक्षण दस साल से भी अधिक समय तक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। इतनी समय अवधि खेल प्रशिक्षण को देकर ही खिलाड़ी अपने प्रदेश व देश को गौरव दिला पाता है। हिमाचल प्रदेश में लगातार प्रशिक्षण कार्यक्रम का कोई भी प्रावधान अभी तक नहीं बन पाया है। हिमाचल प्रदेश राज्य युवा सेवाएं एवं खेल विभाग के प्रशिक्षकों को कभी विभिन्न विभागों की भर्तियों में ड्यूटी तो कभी मेलों व उत्सवों में हाजिरी भरनी पड़ती है। खेल प्रशिक्षक की नियुक्ति ही उच्च खेल परिणामों के लिए की गई होती है, मगर यहां पर प्रशिक्षकों को केवल मल्टीपर्पज कर्मचारी बना दिया गया है। हिमाचल प्रदेश के अधिकतर प्रशिक्षकों का कार्य उच्च खेल प्रशिक्षण से हट कर अपनी फिटनेस तथा सेना में भर्ती कराने तक सीमित हो गया है। हिमाचल प्रदेश के मेलों व उत्सवों में किसी और खेल का प्रशिक्षक किसी और ही खेल की प्ले फील्ड में नजर आता है। इसी तरह पुलिस आदि विभागों की भर्तियों में एथलेटिक्स प्रशिक्षकों की ड्यूटी तो समझ आती है, मगर वहां तो हर खेल के प्रशिक्षक को भेज दिया जाता है। नियमानुसार इन भर्तियों के लिए एथलेटिक्स प्रशिक्षक ही सक्षम है, क्योंकि इस टैस्ट में केवल एथलेटिक स्पर्धाओं को ही रखा गया है। ऐसे में एथलेटिक्स प्रशिक्षक की ड्यूटी तो समझ आती है, मगर वहां अन्य खेलों, जैसे कुश्ती, मुक्केबाजी, हैंडबाल व वॉलीबाल आदि के प्रशिक्षक का क्या औचित्य है, इस बात का उत्तर किसी के भी पास नहीं है। विभिन्न सरकारों ने खेल ढांचे में काफी तरक्की भी की है, मगर क्षमतावान प्रशिक्षकों की नियुक्ति के बारे में हिमाचल में अभी तक कुछ भी नहीं हो पाया है। स्तरीय प्रशिक्षकों के बिना उत्कृष्ट प्रदर्शन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जो प्रशिक्षक खेल प्रशिक्षण से दूर रह कर मौज-मस्ती कर रहा है, वह तो खुश रहता होगा, मगर जो सच ही में प्रशिक्षण करवा रहा होगा, वह जब कई दिनों तक खेल मैदान से दूर रहेगा तो फिर कौन अभिभावक अपने बच्चे को बिना प्रशिक्षक के मैदान में भेजेगा। हद तो तब हो जाती है जब राज्य में चल रहे खेल छात्रावासों में नियुक्त प्रशिक्षकों की ड्यूटी भर्तियों में लगा दी जाती है और खेल छात्रावास में रह रहे खिलाडियों को भी खेल प्रशिक्षण से दूर कर दिया जाता रहा है। क्या प्रतिभा खोज से चयनित इन अति प्रतिभाशाली खिलाडियों को प्रशिक्षक से कुछ समय के लिए ही सही, इस तरह प्रशिक्षण कार्यक्रम से दूर करना कहां तक उचित है? खेल छात्रावासों में नियुक्त प्रशिक्षकों की ड्यूटी खेल प्रशिक्षण के सिवा और कहीं भी नहीं होनी चाहिए। आजकल हर शिक्षित मां-बाप के दो और कई जगह तो एक ही बच्चा है, ऐसे में वह उसे उस क्षेत्र में उच्चतम शिखर तक ले जाना चाहता है जिसमें बच्चे की रुचि व उस क्षेत्र के लिए पर्याप्त प्रतिभा भी हो। आज का अभिभावक अपने बच्चों के कैरियर की खातिर ही सरकार की मुफ्त शिक्षा सुविधाओं को छोडक़र निजी क्षेत्र की महंगी, मगर अधिक गुणवत्ता वाली शिक्षा के लिए लाखों रुपए खर्च कर रहा है। आज लाखों प्रतिभाशाली विद्यार्थी निजी कोचिंग संस्थानों में डाक्टर व इंजीनियर बनने इसलिए जमा दो की परीक्षा से कई वर्ष पहले पहुंच रहे हैं। इसी तरह अब खेल क्षेत्र में भी हो रहा है। अभिभावक अपने बच्चों के लिए खेलों में भी कैरियर तलाश रहा है और इस सबके लिए अच्छी खेल सुविधाओं के साथ-साथ उच्च स्तरीय प्रशिक्षक भी लगातार कई वर्षों तक उसके बच्चों को मिलना चाहिए ताकि वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता बनने का सफर सफलतापूर्वक पूरा कर सकें। इसलिए देश में निजी खेल अकादमियों का चलन भी बढ़ रहा है। गोपीचंद बैडमिंटन अकादमी के विश्व स्तर के परिणाम सबके सामने हैं। यह सब लगातार अच्छे प्रशिक्षण कार्यक्रम का ही नतीजा है। इस समय विभिन्न खेलों के लिए देश में निजी स्तर पर कई आकादमियां शुरू हो चुकी हैं। इन खेल अकादमियों को अधिकतर पूर्व ओलंपियन चला रहे हैं और यहां से अच्छे खेल परिणाम भी मिल रहे हैं। इन अकादमियों में जो विशेष है, वह यह है कि यहां उच्च क्षमता वाला प्रशिक्षक लगातार उपलब्ध है। हिमाचल प्रदेश के पास आज विभिन्न खेलों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्ले फील्ड तैयार हैं, वहां पर या तो प्रशिक्षक हैं ही नहीं और जहां हैं भी, वे या तो प्रशिक्षण से बेरुख हैं। या उनमें अच्छे स्तर के खेल परिणाम दिलाने की क्षमता ही नहीं है। क्या हिमाचल सरकार पंजाब, गुजरात आदि राज्यों की तरह उत्कृष्ट खेल परिणाम दिलाने वाले बढिया प्रशिक्षकों को यहां लगातार कई वर्षों के लिए अनुबंधित कर प्रदेश के खिलाडियों को राज्य में ही प्रशिक्षण सुविधा दिला कर खेल प्रतिभा का पलायन रोक नहीं सकती है? इससे प्रदेश में खेल वातावरण बनेगा तो हर खेल प्रशिक्षक प्रेरित होकर चाहेगा कि उसके शिष्य भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करें। इस सबके लिए खेल विभाग व जहां प्रशिक्षक प्रशिक्षण करवा रहा है, वहां उसे सही प्रबंधन देकर प्रशिक्षण कार्यक्रम से जोडऩा होगा। तभी पहाड़ की संतानों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के सही मौके मिलेंगे।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, मंगलवार 03 अक्टूबर 2023
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

दिल्ली में ऋषभ विहार में बड़ी धूमधाम से मनाया गया दशलक्षन/पर्युषण पर्व

दिल्ली (विश्व परिवार)। दिल्ली की धर्म नगरी ऋषभ विहार में दशलक्षण महापर्व में श्री 1008 इंद्र ध्वज महामंडल विधान प्राकृत ज्ञान केसरी आचार्य श्री 108 सुनील सागर जी महाराज सहसंग के सानिध्य में संपन्न हुआ। ऋषभ विहार जैन समाज के चेयरमैन विजय जैन ने बताया की जिसमें, हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर व दर्शन कर कर पुण्य अर्जन किया दशलक्षण पर्व के दिनों में जैन समाज में व्रत उपवास साधना का बहुत महत्व है। श्री विपुल जैन महामंत्री ने बताया की कई संतो ने भी 10 दिन के निर्जल उपवास किए। आकाश जैन सदस्य जैन समाज ने बताया की दिल्ली में लगभग 1000 से ज्यादा लोगों ने 10 दिनों के उपवास किये 10000 से ज्यादा लोगों ने अनंत चतुर्दशी के दिन उपवास किये। जिनका पारणा 29 सितंबर को श्री सुनील जैन प्रधान ऋषभ विहार व सकल समाज के लोगों द्वारा हुआ। जैन अनुयायियों में उपवास करने वालों की मुख्य भावना सर्व जगत शांति की होती हैं। मनोज जैन सदस्य जैन समाज ने बताया की ऋषभ विहार जैन समाज ने लगभग 15 लाख की राशि एकाकृत की को की सिद्ध क्षेत्र श्री गिरनार को बचाने के लिए जूनागढ़ गुजरात में चल रहे कोर्ट केस की सहायता लिए भेजी जाएगी।

स्वामी नरेंद्र आचार्य जी महाराज का एकदिवसीय प्रवचन दर्शन एवं समस्या मार्गदर्शन का कार्यक्रम सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। अनंत श्री विभूषित जगतगुरु रामानंदाचार्य श्री स्वामी नरेंद्राचार्य महाराज नानीज धाम महाराष्ट्र का एक दिवसीय प्रवचन दर्शन एवं समस्या मार्गदर्शन कार्यक्रम छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले के डोंगरगांव तहसील में स्थित कृषि उपज मंडी परिसर में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में लगभग 10 हजार भक्तों ने दर्शन लाभ प्राप्त किया जिसमें कार्यक्रम में लगभग 800 भक्तों का समस्या मार्गदर्शन किया गया तथा 600 से अधिक भक्तों ने उपासना दीक्षा लेकर स्वामी जी का आशीर्वाद प्राप्त किया। स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा अंतर्गत 1 अक्टूबर 2023 को प्रात: 10:00 बजे से 1 घंटा तक स्वच्छता कार्यक्रम के तहत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को स्वच्छांजलि देने हेतु जगतगुरु नरेंद्राचार्य जी महाराज संस्थान नानीज धाम महाराष्ट्र मुख्य पीठ के छत्तीसगढ़ उपपीठ स्व स्वरूप संप्रदाय भक्त सेवा मंडल छत्तीसगढ़ द्वारा जगद्गुरु नरेंद्राचार्य जी महाराज के मार्गदर्शन में राजनांदगांव जिले के डोंगरगांव तहसील अंतर्गत ग्राम अर्जुनी में बाजार एवं सड़क किनारो की समुचित सफाई किया गया। दिनांक 1 अक्टूबर 2023 को जगतगुरु श्री द्वारा एक दिवसीय प्रवचन दर्शन एवं समस्या मार्गदर्शन समारोह डोंगरगांव जाते समय रास्ते में ग्राम अर्जुनी में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस अवसर पर स्वामी जी द्वारा स्वच्छता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि न केवल अपने घर बल्कि आसपास के क्षेत्र को भी साफ सुथरा रखना चाहिए। कोई भी कचरा सड़क पर या नाली पर नहीं डालना चाहिए। प्लास्टिक का उपयोग धीरे-धीरे बंद करना चाहिए। जिससे पर्यावरण का संरक्षण हो सके और हम स्वस्थ रहकर दीर्घायु जीवन जी सके।

नई पहल, 151 बच्चों ने की अखंड हनुमान चालीसा की सराहनीय शुरूआत

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी पितृ पक्ष के प्रथम रविवार एक अक्टूबर को छत्तीसगढ़ लोहाणा महिला मंडल की तरफ से आशीर्वाद भवन, बैरन बाजार में अखंड संगीतमय 108 हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन किया गया। महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती रेखा बेन रायचुरा ने बताया कि 12 घंटे के इस पाठ का सबसे प्रमुख आकर्षण रहा सुबह सुबह इसकी शुरुआत 151 बच्चों के द्वारा पारंपरिक वेश कुर्ता पैजामा में एक साथ पंक्तिबद्ध बैठकर सामूहिक और सस्वर चालीसा पाठ करना है। इसमें तीन वर्ष से पंद्रह वर्ष की उम्र तक के बच्चे शामिल हुए। भजन गायक मितेश परमार ने भी अपनी प्रस्तुति दी। राज्य गौसेवा आयोग के अध्यक्ष महंत रामसुंदर दास व शदाणी दरबार के पीठाधीश संत युधिष्ठिर लाल ने बच्चों को अपने आशीर्वाद दिये। पाठ के दौरान गुजराती समाज के विभिन्न घटकों के अध्यक्ष किशन मिरानी, कीर्ति व्यास,नीतिन ढोलकिया,प्रकाश बारमेड़ा,राजेश राजा, शैलेश कारिया,जयेश पिथालिया,कैट के अध्यक्ष जितेंद्र दोशी, कान्यकुब्ज सभा एवं शिक्षा मंडल के अध्यक्ष अरुण शुक्ला,रज्जन अग्निहोत्री,हेमंत तिवारी, छत्तीसगढ़ चिकित्सा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. राकेश गुप्ता, केबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त सुशील सन्नी अग्रवाल,भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता संजय श्रीवास्तव,शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गिरीश दुबे, छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री कन्हैया अग्रवाल, छत्तीसगढ़ सकल गुजराती समाज के अध्यक्ष कौशिक कट्टा, भाजपा नेता चंद्रेश शाह, डॉ.अजय तिवारी, शिवनारायण मूंधड़ा, विपिन मिरानी,राजेश राजा,पूनम राजा,अर्चना दास,शरद मिरानी,हेमंत गोहिल आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम में आयोजन और व्यवस्थाओं में हितेश रायचुरा,मुकेश शाह, प्रकाश पुजारा, ललित जोबनपुत्रा, संतोष परमार,अनिल रायचुरा,गोपू रायचुरा ,नेहा माणेक, प्रेरणा भट्ट, तृप्ति झवेरी, डाली तन्ना, मधु गढ़िया, पद्मा बेन मिरानी, शिवांगी पोमल, योगिनी पुरोहित,प्रकाश पारपाणी, कमलेश रुपारेलिया, अनिल रुपारेलिया, संजय टांक, दीपक व्यास, मनीष पारपाणी, कमलेश नथवाणी, पंकज झवेरी, किरीट गढ़िया, पंकज पोमल, नितिन पोमल आदि मौजूद रहे।

अहिंसा दिवस : सबके प्रति संवेदनशील बनें : मुनिश्री संधानसागर जी महाराज

एलोरा (विश्व परिवार)। संत शिरोमणि आचार्यश्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य युवा तरूणाई के प्रखर वक्ता मुनिश्री 108 संधानसागर जी महाराज ने कहा कि स्वयं के कष्टों के प्रति सहनशील बनें,सभी के प्रति स्नेहशील बनें तभी जीवन संस्कारशील बनेगा। मुनिश्री जी ने आगे कहा कि अहिंसा के मात्र नारे ही नहीं लगाना है, अहिंसा को जीवन का अंग बनाना है। पाप से-कषाय से बचना है तो अहिंसा धर्म को जीवन में लाना ही होगा। संतों ने कहा कि हिंसा जहां है वहीं पांच पापों का आगमन हो जाता है। मुनिश्री जी गांधी जयन्ती पर आयोजित पंचायत भवन वेरूल में उन्होंने कहा कि वे क्या थे? हम क्या हो गये? हमें क्या होना चाहिए? उसे कैसे पाना है? मुनिश्री जी के मार्गदर्शन में गांधी जी के जीवन व्यक्तित्व को रखा गया।

पंचायत भवन में मनाया अहिंसा दिवस : संत शिरोमणि आचार्यश्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक युगल शिष्य मुनिश्री 108 दुर्लभसागर जी महाराज एवं मुनिश्री 108 संधानसागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में 2 अक्टूबर पर गांधी जयंती पर अहिंसा दिवस मनाया। सरपंच, उपसरपंच, ग्राम सेवक एवं ग्राम पंचायत सदस्य की उपस्थिति में ग्राम पंचायत एलोरा में भव्य अहिंसा दिवस पर मुनिद्वय के मंगल प्रवचन हुए। हिंसा एवं भारत विषय पर मुनिश्री संधानसागर जी महाराज ने कहा कि अहिंसा ही परम धर्म है,अहिंसा ही परम तप है, अहिंसा ही परम ज्ञान है। उपस्थित श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा कि अहिंसा सब धर्मों में श्रेष्ठ है, हिंसा में सारे पाप समाहित हैं। क्षुधा से पीड़ित की सेवा करना और हिंसा से सदैव बचना सभी धर्मोपदेश का सार है। पूज्यश्री ने रामचरितमानस में तुलसीदास जी द्वारा रचित चौपाइयों में बताया कि हमें मन के स्तर पर, वचन के स्तर पर एवं शरीर के स्तर पर अहिंसा का पालन करना है। पर निंदा सम अद्य न गरीषा, धरम ने धूसर सत्य समाना एवं पर पीड़ा सम न अधमाई। डाकू-ड्राईव्हर एवं डॉक्टर का उदाहरण देते हुए कहा कि भावों की हिंसा से बचें। दया धर्म का मूल है। दया के बिना कोई भी धर्म नहीं टिक सकता। आचार्यश्री जी ने हायकू दिया कि अहिंसा पर की पीड़ा अपनी करूणा की परीक्षा लेती है। -**विद्यावाणी संकलन**

अहिंसा दिवस विशेष : सुखद जीवन का एक मूल आधार- अहिंसा : आचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

जतारा (विश्व परिवार)। आज का दिन लोक में अहिंसा दिवस कहलाता है क्योंकि आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जिनके जीवन में अहिंसा का सर्वोच्च स्थान रहा, उनका जन्मदिवस है। ध्यान रखना- जिनशासन में, जिनागम पंथ में हर दिन, हर घण्टा, हर मिनिट और हर क्षण अहिंसा दिवस कहलाता है। यहाँ किसी प्राणी का घात तो दूर ही रहा, किसी भी प्राणी के प्रति यहाँ अन्यथा - हिंसात्मक विचार भी नहीं किए जाते। जैन धर्म में भगवान महावीर के अनुयायी प्राणीमात्र के प्रति प्रशस्त सद्भावना रखते हैं यहाँ तक कि कोई शत्रुता का व्यवहार भी रखता हो उसके प्रति भी सदा जैन-धर्मानुयायी सद्भावना रखता है।

महात्मा गाँधी ने अपने देशवासियों को संदेश दिया, उन्होंने कहा- ज़ कभी पाप की कमाई से अपने परिवार को संचालित मत करना 7 क्या है पाप की कमाई? बन्धुओ ! जो व्यक्ति बिना मेहनत के धन का संग्रह करता है, यह सबसे बड़ा पाप है। ध्यान रखना - जो वस्तु आपको बिना मेहनत के प्राप्त होती हो, उस वस्तु का आपके जीवन में कोई मूल्य नहीं होगा, उस वस्तु की आप कभी कद्र नहीं कर सकते।

गाँधी जी का यह एक सूत्र यदि हमारे देश के राजनेताओं को समझ में आ जाए तो देश वासी कर्मठ, कार्यशील हो जाएंगे। आज राजनीति की दुर्गंध में नेता लोग देशवासियों को उनके जीवनोपयोगी सामग्री फ्री में बाँट रहे हैं इससे हमारा देश समृद्ध नहीं बन सकता। आप देशहित में कुछ भी देशवासियों का प्रदान करें तो उसका कुछ-न-कुछ मूल्य अवश्य रखें। उनको लगना चाहिए कि हमने कुछ देकर के प्राप्त किया है अत: जीवन में उस वस्तु की कद्र रहेगी।

हमारे देश के शुभचिन्तकों ने 365 दिनों में मात्र 1 दिन अहिंसादिवस के रूप में रखा है और शेष 364 दिन 7 भगवान महावीर स्वामी ने कहा ङ्क हमारा हर दिन, हर पल अहिंसा दिवस होना चाहिए। वस्तुत: अहिंस के बिना आपका परिवार सुकून से नहीं जी सकता। एक अहिंसा के बल पर ही आप परिवार में प्रेम-मैत्री स्नेह पूर्वक रह सकते हैं।

एक प्राणी के प्राण-हरण से भी बड़ी हिंसा वह है जब व्यक्ति किसी के बारे में बुरा ही बुरा विचारता रहता है। यदि देश का प्रत्येक नागरिक यह सोच ले, कि मैं कभी अपनों के बारे में बुरा नहीं सोचूँगा तो निश्चित ही आज भी सर्वत्र सुख-शान्ति- समृद्धि का वातावरण देखा जा सकता है। अहिंसा मानव जीवन की मूलभूत इकाई है। अहिंसा के बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। -**अनुज जैन**

जैन समाज ने पर्युषण पर्व के समापन पर श्रीजी को पालकी में विराजमान कर निकाली भव्य शोभायात्रा

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। नगर में पूरे 10 दिनों तक बड़े ही धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ धार्मिक वातावरण में दिगंबर जैन समाज का पर्वाधिराज पर्युषण पर्व चलता रहा वहीं धर्म की प्रभावना भी बढ़ी। इसी समय दस दिनों तक हिंदू समाज के द्वारा विघ्नहर्ता भगवान श्री गणेश जी का पावन उत्सव गणेशोत्सव के रूप में पूरे भक्ति भावपूर्वक आराधना की। पर्वराज पर्युषण के समापन पर श्रीजी को पालकी में विराजमान कर भव्य शोभायात्रा निकाली गई जो की नगर के मुख्य मार्गो सदर रोड, सुभाष चौक, बस स्टैंड मां काली मंदिर, मां कर्मा मंदिर गंज रोड मंडी होते हुए वर्णी भवन में वापस पहुंची वहां पहुंचने पर श्री महावीर भगवान का अभिषेक पूजा आराधना की गई। श्रीजी का अभिषेक करने का परम सौभाग्य विनय सिंघई, अनुभव जैन, आदित्य जैन, वैभव चौधरी, अरिहंत जैन, आलोक जैन, रूपचंद जैन व हार्दिक गंगवाल आदि लोगों को प्राप्त हुआ। श्री जी की पालकी को सर्वप्रथम उठाने का सौभाग्य नीरज हार्दिक गंगवाल, मनोज अनिल जय जैन, नीतू, नीलम, निखिल जैन, डॉ राजेंद्र अर्पण समर्पण गदिया परिवार को प्राप्त हुआ। पर्यूषण पर्व पर जगह-जगह साधु संतों के सानिध्य में 10 दिनों तक विभिन्न शिविरो का आयोजन किया जाता है, इसी कड़ी में सम्मेद शिखरजी तीर्थ क्षेत्र में मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज के मार्गदर्शन में भव्य शिविर का आयोजन किया गया। जहां पूरे देश भर से शिविरार्थी भाग लेने पहुंचे वहीं तप आराधना में हिस्सा लेने नगर से 16 लोग शिविर में गए हुए थे वहां से वापस आने पर सामाजिक जनो द्वारा उन सभी का भव्य स्वागत सत्कार सम्मान किया गया।सभी शिविरार्थीयों ने वहां के अपने अनुभवों को समाज के सामने साझा किया। अरुणा जैन ने शिखरजी शिविर में भाग लेते हुए 32 दिन का उपवास कर 16 कारण के व्रत किए एवं कामिनी चौधरी ने दस लक्षण के व्रत कर 10 दिन का उपवास व तप किया। तप की आराधना में यहां दो लोगों ने 32 दिन के उपवास किया विमल सिंघई एवं अरुणा जैन, भाई विमल सिंघई 32 दिन उपवास एवं पूरे चातुर्मास में एकासन कर रहे हैं। इनके अलावा 17 लोगों ने 10 दिन का उपवास किया।उपवास के पश्चात सभी का सामूहिक पारणा कराया गया एवं पंचायत कमेटी के अध्यक्ष किशोर सिंघई, संरक्षक रमेश पहाड़िया, उपाध्यक्ष सूरित जैन एवं सचिव अखिलेश नाहर ने सभी तपस्वियों को अभिनंदन पत्र भेट कर उनका सम्मान किया। दस उपवास व तपस्या करने वाले सदस्य कामिनी चौधरी, संगीता सिंघई, नीलम जैन, पूजा पहाड़िया, रिया गदिया, विक्रांत जैन, अनुभव जैन, अभिजीत चौधरी, सुजीत जैन कुमारी श्रेया नाहर, कुमारी सुमन, कुमारी सृष्टि, कुमारी संस्कृति हर्षित जैन आर्जव जैन, रवि जैन, दर्शन दीप सिंघई ने 10 उपवास की तपस्या की।तप आराधना पर सभी ने उनके पुण्य की अनुमोदना की. शोभा यात्रा के बाद पार्श्व नाथ दिगंबर जैन मंदिर मे ध्वजारोहन करने का सौभाग्य अंजय सिंघई मून सिंघई परिवार को प्राप्त हुआ।

आचार्य श्री प्रमुखसागर जी महाराज के स्वर्णिम जन्म जयंती समारोह पर हुए विविध आयोजन

लोगों को शुद्ध एवं शीतल पेयजल उपलब्ध हो इस उद्देश्य से वाटर कूलर लगाए गए

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। आचार्य श्री प्रमुख सागर जी महाराज के स्वर्णिम जन्म जयंती के अवसर पर नगर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन संपन्न हुआ। आचार्य प्रमुख सागर जी महाराज का नगर आगमन ब्रह्मचारी एवं मुनि अवस्था में आचार्य पुष्पदंत सागर जी महाराज के साथ पूर्व में हुआ था। आचार्य प्रमुख सागर महाराज जी के प्रमुख शिष्यों में से एक हैं।

आचार्य श्री प्रमुख सागर जी की स्वर्णिम जयंती के अवसर पर विजय, मुकेश पाटनी परिवार के द्वारा स्थानीय श्री गोपाल गौशाला में गौमाता को गुड़, चना व रोटी खिलाकर गायों की सेवा की गई। गौशाला में डॉक्टर राजेंद्र गदिया, दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष किशोर सिंघई, उपाध्यक्ष सुरित जैन सपरिवार, प्रभात जैन, आलोक पहाड़िया सहित अनेक लोग उपस्थित थे। आचार्य श्री के उपदेशानुसार मुक प्राणियों की सेवा करना हमारा प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। आचार्य श्री का चातुर्मास असम में हो रहा है। गुरुभक्त पाटनी परिवार के द्वारा गौशाला में इस दिन की संपूर्ण व्यवस्था की गई। पाटनी परिवार द्वारा आचार्य श्री के स्वर्णिम जयंती के अवसर पर नगर के शासकीय अस्पताल एवं तहसील कार्यालय तथा शासकीय कन्या शाला के पास वाटर कूलर लगाकर लोगों के लिए शुद्ध व शीतल पेयजल की व्यवस्था की गई जिससे लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध हो सके। शासकीय अस्पताल में वाटर कूलर लगने से आसपास के गांव से आने वाले मरीजों व उनके परिजनों को पेयजल उपलब्ध कराने के लिए अस्पताल के डॉक्टर एवं स्टाफ ने पाटनी परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया। समाजसेवी एवं वरिष्ठ चिकित्सक डॉ राजेंद्र गदिया, दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष किशोर सिंघई सकल जैन समाज के अध्यक्ष शेखर बाफना ने संयुक्त रूप से फीता काटकर वाटर कूलर लोगों को समर्पित किया। तहसील ऑफिस व कन्या शाला परिवार के द्वारा पाटनी परिवार का धन्यवाद ज्ञापित कर उनके इस पुनीत कार्य के लिए साधुवाद दिया गया। गुरु भक्त विजय पाटनी, मुकेश पाटनी एवं सभी पाटनी परिवार के द्वारा किए गए इस कार्य की सर्वत्र प्रशंसा की जा रही है। पाटनी परिवार ने सभी आगंतुकों का आभार प्रकट कर आगे भी यथा संभव गुरु आज्ञा का पालन कर सेवा भाव से नगर में विभिन्न सेवाभावी कार्य करने का संकल्प लिया। -**किशोर जैन**

सुख का साधन- साधु संगत : आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी

बड़ौत (विश्व परिवार)। ज्ञानियो! यह शरीर एक यंत्र है, इसका संचालक- आत्मा है। आत्मा त्रयकालिक होती है। शरीर से आत्मा निकलने पर वह कांतिहीन हो जाता है। हमारी आत्मा का कल्याण हो, इसलिए हम धर्म-पुरुषार्थ करते हैं। जो सच्चे भगवान् होते हैं वह किसी पर नाराज नहीं होते, किसी पर प्रसन्न नहीं होते वह तो परम वीतरागी होते हैं। ज्ञानियो! जो साधक प्रशंसा में, निंदा में समान रहता है वही सच्चा साधक है। साधु जीवन में समत्व भाव का होना परम आवश्यक है। कोई शूल भी चुभाये, कष्ट भी दे फिर भी साधक का मन मलिन न हो वही श्रमण संस्कृति में साधु संज्ञा को प्राप्त है। जैसे आम्र के वृक्ष पर आम शोभित होते हैं। वैसे ही साधुओं में समता, क्षमा शोभित होती है। युवाओ ! संसार के सभी सुख एक ओर हों और साधु सेवा सामीप्य का सुख एक ओर हो तो ज्ञानियो लीसाधु संगत का सुख श्रेष्ठ है। सज्जन पुरुषों पर साधुओं का भी पक्षपात होता है। शील ही सज्जनों का श्रृंगार है। साधुओं की भक्ति सेवा से सुंदर रूप की प्राप्ति होती है। जो श्रद्धा को जोड़ दे वही सच्चा साधु है। ज्ञानियो ! पशु भी शुभ भावों से पुण्य कमा सकता है। पशु भी पुरुषार्थ पूर्वक भगवान् बन सकता है। ज्ञानी तुम कितने ही छुपकर पाप कर लेना, परंतु स्वयं और स्वयंभू से कौन छुपा सकता है? तुम पाप छुपकर कर सकते हो, परंतु उसके उदय को तुम नहीं छुपा पाओगे।सभा का संचालन पंडित श्रेयांस जैन ने किया। -**वरदान जैन**

मुनि श्री सुधासागर जी महाराज का 41वॉ दीक्षा दिवस मनाया गया

आगरा (विश्व परिवार)। ताजनगरी आगरा में विराजमान आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य जैन जगत के विख्यात संत मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज का 41वा दीक्षा दिवस क्षुल्लक श्री गंभीर सागर जी महाराज के मार्गदर्शन प्रतिष्ठा चार्य प्रदीप भइया के संचालक में विनोद छाबड़ा जयपुर टीम द्वारा सुन्दर संस्कृतिक प्रस्तुत दी गई इस दौरान देशभर के श्रद्धालुओं द्वारा श्रद्धा भक्ति से गुरु गुण गान दिवस के रूप भक्ति भाव से 41वा दीक्षा दिवस मनाया गया जहां भक्तो ने श्रद्धा पूर्वक अर्घो का समर्पण किया इस दौरान क्षुल्लक श्री गंभीर सागर जी महाराज ने कहाकि मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी जब दहाड़ते है तो दो सौ वाइस देशों में उनकी वात को भक्त ध्यान से सुनकर मनन करते हैं इन्होंने सैकड़ों मन्दिरो का निर्माण जीणोद्धार के साथ शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में भी कदम उठाए हैं। 41वे दीक्षा दिवस पर मुनि पुगवं श्री सुधा सागरजी महाराज को नवदा भक्ति का श्रीमती सुशीला पाटनी अशोक पाटनी श्री श्री मति सुचि पाटनी विनित पाटनी के साथ ही हीरा लाल दिव्य विभू वैनारा परिवार को नवंदा भक्ति कर गुरु देव की महा पूजा सौभाग्य भामाशाह परिवार को मिला दीप प्रज्जवन सुशील मोदी राजेन्द्र कटरीना मनीष गदिया प्रमोद पहाड़ियों महावीर वज नरेन्द्र पाठ्या उतम पाठ्य ने किया। तदोपरान्त सभा मंडप में चन्द्रोदय तीर्थ चांद खेड़ी के अध्यक्ष हुकम काका आनंद जैन विजय धुर्रा अशोकनगर संजीव श्रागर मनीष पुक्की विनोदमोदी अशोक खादी संजय जैन कोटा ए के जैन गुना पुण्योदय वालिका छात्रावास की अध्यक्ष रानी जैन हरसोरा नरेश वेद सुमन जी दगरा विकासपटवारी सजय गदिया सूरत योगेन्द्र जैन खेड़का अशोक नगर इन्दौर जयपुर कोटा गुना भीलवाड़ा व्यावर किशनगड़ आदि आये भक्तों ने श्री फल समर्पित किया। -**विजय धुर्रा**

गाँधी जयंती पर डॉ. इन्दु जैन राष्ट्र गौरव ने किया णमोकार महामंत्र का सस्वर पाठ

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की 154वीं जन्म जयंती पर गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति तीस जनवरी मार्ग नई दिल्ली में सर्वधर्म प्रार्थना एवं भक्ति संगीत का आयोजन किया गया। अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर अहिंसा का संदेश पूरे विश्व में गूँजा। इस कार्यक्रम में भारत की राष्ट्रपति माननीया द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ एवं सभी विशिष्ट जनों ने बापू की समाधि पर पुष्प अर्पित करके उन्हें नमन किया।

राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति ने किया बापू को नमन

सर्वधर्म प्रार्थना के अंतर्गत जैन, बौद्ध, ईसाई, पारसी, बहाई, यहूदी, मुस्लिम, सिक्ख, हिन्दु सभी धर्म के प्रतिनिधियों ने बापू को नमन करते हुए विश्व शांति की भावना से प्रार्थनाएं कीं।

सर्वधर्म प्रार्थना में जैन प्रार्थना के अंतर्गत डॉ. इन्दु जैन राष्ट्र गौरव ने राजा ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम से विख्यात भारत भूमि को एवं गांधी जी को नमन किया तथा णमो जिणाणं - जय जिनेन्द्र, ह्रीं नम: सबको क्षमा - सबसे क्षमा कहते हुए विश्व शांति और सभी के कल्याण की भावना से णमोकार महामंत्र का सस्वर पाठ किया।

गांधी स्मृति दर्शन समिति के अध्यक्ष भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री जी एवं उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल जी के मार्गदर्शन में गांधी जयन्ती पर आयोजित गायिका विद्या शाह की संगीतमय भावांजलि, सर्वधर्म प्रार्थना एवं विद्यालय के बच्चों द्वारा भारत को समर्पित मधुर गीत का सीधा प्रसारण दूरदर्शन के विभिन्न चैनल के माध्यम से लाखों लोगों तक पहुँचा।

सर्वधर्म प्रार्थना एवं विद्या शाह के सुमधुर भक्ति संगीत के बाद भारत की राष्ट्रपति माननीया द्रौपदी मुर्मू जी, उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी, सांसद मीनाक्षी लेखी जी, गांधी स्मृति दर्शन समिति के उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल जी ने सभी धर्म के प्रतिनिधियों का अभिवादन किया। धर्म गुरुओं ने भी सकुशलता की भावना को अभिव्यक्त करते हुए उनका अभिवादन किया। अभिवादन के क्रम मे राष्ट्रपति महोदया से डॉ. इन्दु जैन ने णमो जिणाणं-जय जिनेन्द्र-उत्तम क्षमा कहा तो राष्ट्रपति महोदया ने प्रसन्न मुद्रा में सहज भावों की अभिव्यक्ति दी।

ज्ञातव्य है कि विगत कई वर्षों से भारत में आयोजित कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में डॉ. इन्दु जैन राष्ट्र गौरव जैन धर्म का प्रतिनिधित्व कर चुकीं हैं। आपने नवीन संसद भवन के ऐतिहासिक शिलान्यास एवं उद्घाटन समारोह में जैन धर्म का प्रतिनिधित्व करके पूरे विश्व की जैन समाज का गौरव बढ़ाया था। जिनेन्द्र देव, गुरुओं और माता-पिता के आशीर्वाद से, आप अपने विशेष कार्यों के लिए कई विशिष्ट पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकीं हैं। आप निरंतर राष्ट्रसेवा, जैनदर्शन, जीवन मूल्य, प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी भाषा, ब्राह्मी लिपि और शाकाहार के प्रचार-प्रसार में पूर्णत: समर्पित रहतीं हैं। गणमान्य व्यक्तियों ने डॉ. इन्दु द्वारा प्रस्तुत जैन प्रार्थना की प्रशंसा की तथा भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर, मंगलवार 03 अक्टूबर 2023

संक्षिप्त समाचार

जादू-टोना के आरोप में पूरे परिवार की बेदम पिटाई

गरियाबंद(विश्व परिवार)। जादू-टोना के आरोप में वृद्ध दंपत्ति व उसके दोनों बेटों की सरपंच और उनके सहयोगियों ने बेदम पिटाई की है. यह मामला देवभोग थाना क्षेत्र के बनुवापारा गांव का है. इस मामले की शिकायत के बाद देवभोग पुलिस सालेहभांठा सरपंच प्रेमसिंह गोड, सरपंच पुत्र देवानंद गोड, सहयोगी टेकराम व जानकराम के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच में जुटी है. थाना प्रभारी गौतम गावड़े ने बताया कि गुरुवार को बनुवापारा निवासी प्रार्थी देर रात थाने पहुंचकर इस मामले की शिकायत की. शिकायत के अनुसार बुधवार की रात करीब साढ़े 12 बजे प्रार्थी मानसिंह ओटी 65 वर्ष अपनी पत्नी कुसुमा बाई, पुत्र हुपेंद्र व बेटी रामकुमारी के साथ घर पर सोए हुए थे, तभी सरपंच प्रेमसिंह अपने बेटे व अन्य सहयोगी के साथ उसे उठाया, फिर जादू-टोना का आरोप लगाकर पूरे परिवार वालों की पिटाई की. पीड़ित के मुताबिक, घटना के बाद पूरा परिवार रात भर नहीं सोया. पीड़ित ने कहा, सरपंच का बेटा पहले भी छेड़छाड़ के मामले में जेल जा चुका है. सरपंच परिवार की दबंगई के कारण अगली सुबह गुरुवार को रिपोर्ट लिखाने के लिए साहस जुटाया. शाम ढलने के बाद नजर बचाकर थाने के लिए निकले और गुरुवार रात मामले की शिकायत देवभोग थाने में दर्ज कराई.

कोहड़िया में हत्या के मुख्य आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार, चाकू जप्त

कोरबा(विश्व परिवार)। प्रार्थी राजकुमार राव सीएसईबी थाना सिविल लाईन रामपुर में एक रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि इसके मोहल्ले में गणेश चतुर्थी पर भगवान गणेश बैठाए गए थेए जो 28 सितंबर को विसर्जन के लिये सभी मोहल्ले वाले बाजे.गाजे के साथ लेकर कोहड़िया फिल्टर प्लांट नहर लेकर जा रहे थे तथा सायं करीब 06रू00 बजे पीपरपारा कोहडिया के स्कुल के सामने पहुंचे थे उसी समय अन्य मोहल्ले के लोग भी गणेश विसर्जन करने जा रहे थे। उनमें से एक लड़का मेनरोड के डिवाईडर के बीच में लगे पेड़.पौधों को उखाड़ रहा था, जिसे अन्य लोगो ने मना किया तो उसी बात पर झगड़ा विवाद चालू हो गया। एक लड़का धारदार चाकू लेकर प्राणघातक हमला कर दिया। जिससे मौके पर ही हरीश राव उम्र करीब 17 वर्ष की मृत्यु हो गई। प्रार्थी कि रिपोर्ट पर चौकी सीएसईबी जिला कोरबा में अपराध कमांक 435/2023 धारा 302, 307 भादवि पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है एवं घटना से आहत भूपेन्द्र गुप्ता को उपचार हेतु जिला अस्पताल कोरबा में दाखिल कराया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए घटना की सूचना तत्काल वरिष्ठ अधिकारियों को दी गयीए कोरबा जिला पुलिस अधीक्षक यूण् उदय किरण के निर्देशनए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा के मार्गदर्शन एवं नगर पुलिस अधीक्षक कोरबा रॉबिन्सन गुड़िया के पर्यवेक्षण में थाना प्रभारी सिविल लाईन रामपुर निरीक्षक मृत्युंजय पाण्डेय तथा चौकी प्रभारी सीएसईबी उप निरीक्षक नवीन पटेल को मामले में त्वरित सख्त एवं प्रभावी कार्यवाही कर मामले में संलिप्त आरोपियों की गिरफ्तारी करने का निर्देश प्राप्त हुआ। वरिष्ठ अधिकारियों से प्राप्त निर्देश के परिपालन में थाना प्रभारी सिविल लाईन रामपुर निरीक्षक मृत्युंजय पाण्डेय के कुशल नेतृत्व में चौकी प्रभारी सीएसईबी उप निरीक्षक नवीन पटेल द्वारा अपने अधीनस्थ कर्मचारियो के सहयोग से त्वरित कार्यवाही करते हुए घटना कारित करने वाले मुख्य आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ करने पर जुर्म घटित करना स्वीकार कियाए जिसके कब्जे से घटना में प्रयुक्त 01 नग दोधारी चाकू जप्त कर वैधानिक कार्यवाही करने उपरांत आरोपी को प्रकरण में गिरफ्तार किया गया है। न्यायिक रिमाण्ड पर माननीय न्यायालय पेश कर जेल वारंट बनने पर जिला जेल कोरबा में दाखिल किया गया है।

कृषक सम्मेलन के दौरान फेंके खाना को खाने से गायों की मौत! भाजपा ने किया चक्काजाम

बलौदाबाजार(विश्व परिवार)। भाटापारा के ग्राम सुमाभाठा में दो दिन पूर्व आयोजित कृषक सह श्रमिक सम्मेलन के दौरान फेंके गए भोजन को खाने से बड़ी संख्या में गायों की मौत होने के साथ बीमार पड़ गई हैं. भाजपा ने गायों की मौत पर चक्काजाम कर मामले की जांच कराने की मांग की है. ग्राम तरेंगा के मुख्य मार्ग पर चक्काजाम कर रहे भाजपा नेताओं ने शासन-प्रशासन से मांग की है कि गायों की मौत की जांच कराई जाए, साथ ही दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए पशु मालिकों को उचित मुआवजा प्रदान किया जाए. भाजपा युवा मोर्चा के अध्यक्ष अश्वनी शर्मा ने गायों की मौत के लिए कांग्रेस सहित प्रशासन पर आरोप लगाते हुए कहा है कि यदि इस घटना की जांच में और दोषियों पर कार्रवाई नहीं होती है, तो उग्र प्रदर्शन किया जाएगा. भाटापारा एसडीएम नरेन्द्र बंजारा ने बताया कि कुछ गायों की मौत हुई है. मामले की जांच की जा रही है.

नशे के विरुद्ध गरियाबंद पुलिस की लगातार कार्यवाही जारी

गरियाबंद (विश्व परिवार)। दूसरे दिन गरियाबंद पुलिस को गांजा के तस्करी में रोक लगाने में मिली सफ्लता । गरियाबंद पुलिस ने 27 किलो ग्राम अवैध गांजा के साथ दो अंतरराजीय तस्कर को किया गिरफ्तार। सायबर टीम गरियाबंद एवं थाना देवभोग की कार्यवाही। विवरण:- जिला गरियाबंद क्षेत्र में हो रहे अवैध रूप से गांजा, हीरा, शराब, वन्य प्राणियों के अवैध तस्करी को रोकने के लिए जिला गरियाबंद के उमनि/ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अमित तुकाराम काम्बले के दिशा-निर्देश, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डी. सी. पटेल के मार्गदर्शन, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस गरियाबंद अतरिक्त पुलिस अधीक्षक अनुज कुमार के पर्यवेक्षण में विशेष अभियान चलाया जा रहा हैं। जिसके परिणाम स्वरूप अवैध तस्करों पर लगातार कार्यवाही की जा रही है। ग्राम भ्रमण के दौरान जरिये मुखबिर से सूचना मिला कि 02 व्यक्ति अंतर्राज्यीय गांजा तस्कर एक मो0सा. ह्छ 24 स्न 4909 में 02 सफेद रंग की प्लास्टिक बोरी में अवैध रूप से अधिक मात्रा में मादक पदार्थ गांजा रखकर ग्राम मालगांव (उड़ीसा) से छत्तीसगढ़ ग्राम बरही की ओर लेके आ

रहे है। उक्त घटना की सूचना वरिष्ठ अधिकारियों को देखकर घटनास्थल रवाना हुआ फिर से बताएं होलिया के आधार पर मार्ग पर नाकाबंदी कर वाहन की चेकिंग दौरान मौसा0 क्रमांक ह्छ 24 स्न 4909 में दो व्यक्ति बैठकर नाका के पास पहुंचे जिन्हें रोककर नाम पता पूछने पर मोसा0 का चालक द्वारा अपना नाम ईश्वर नायक पिता सोमनाथ नायक उम्र 19 वर्ष, पीछे बैठा व्यक्ति अपना नाम लोकनाथ नायक पिता सोमनाथ नायक उम्र 23 वर्ष दोनो साकिनान काकुडिआम थाना मैदलपुर जिला नवरंगपुर (ओडिसा) का रहने वाला बताये। दोनों संधियों का तलाशी लेने पर अवैध रूप से 27 किलो ग्राम गांजा मादक पदार्थ रखा हुआ पाया संदेहियों का उक्त कृत्य अपराध धारा सदर का पाए जाने से 20 (ख) एनडीपीएस एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। घटना में प्रयुक्त मोटर साइकल एवं गांजा को समक्ष गवाहन के जप्त कर दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय पेश किया गया। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी देवभोग निरीक्षक गौतम चंद गावडे के साथ अन्य स्टाफ एवं सायबर टीम गरियाबंद एवं भूमिका सराहनी रही।

नाम आरोपी * 01) नाम ईश्वर नायक पिता सोमनाथ नायक उम्र 19 वर्ष 02) नाम लोकनाथ नायक पिता सोमनाथ नायक उम्र 23 वर्ष दोनो साकिनान काकुडि आम थाना मैदलपुर जिला नवरंगपुर (ओडिसा)

जप्त सामग्री- 27 किलो अवैध गांजा किमती 2,70,000 एवं मोटर साइकल किमती 20,000 कुल जप्त 2,90,000/-

60 किलो ग्राम अवैध गांजा के साथ दो अंतरराजीय तस्कर चढ़ा गरियाबंद पुलिस के हत्थे

गरियाबंद पुलिस के द्वारा घटना में प्रयुक्त मारुति स्विफ्ट कार के साथ 10 लाख का जुमला किया जप्त

गरियाबंद (विश्व परिवार)। गरियाबंद सायबर टीम एवं थाना सिटी कोतवाली गरियाबंद द्वारा 60 किलो ग्राम अवैध गांजा के साथ दो अंतरराजीय तस्कर को पकड़ने में बड़ी सफ्लता प्राप्त हुई है।

जिला गरियाबंद क्षेत्र में हो रहे अवैध रूप से गांजा, हीरा, शराब, वन्य प्राणियों के अवैध तस्करी को रोकने के लिए जिला गरियाबंद के उमनि/ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अमित तुकाराम काम्बले के दिशा-निर्देश, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डी. सी. पटेल के मार्गदर्शन, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस गरियाबंद पुष्पेंद्र नायक के पर्यवेक्षण में विशेष अभियान चलाया जा रहा हैं। जिसके परिणाम स्वरूप अवैध तस्करों पर लगातार कार्यवाही की जा रही है। ग्राम भ्रमण के दौरान जरिये मुखबिर से सूचना मिला कि 02 व्यक्ति अंतर्राज्यीय गांजा तस्कर एक मो0सा. ह्छ 24 स्न 4909 में 02 सफेद रंग की प्लास्टिक बोरी में अवैध रूप से अधिक मात्रा में मादक पदार्थ गांजा रखकर ग्राम मालगांव (उड़ीसा) से छत्तीसगढ़ ग्राम बरही की ओर लेके आ

जा रही है।

इसी कड़ी में सिटी कोतवाली गरियाबंद को जरिये मुखबिर सूचना प्राप्त हुई, की एक लाल रंग की मारूति स्विफ्ट कार क्रमांक ह्छ 17-रू-6311 में सवार दो व्यक्ति द्वारा मादक पदार्थ गांजा रखकर देवभोग से रायपुर की ओर जा रहे है। इस सूचना को वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराकर तत्काल कोतवाली पुलिस के अधिकारी/कर्मचारियों कि टीम गठित की गई । टीम के द्वारा सूचना को तस्दीक कर फारेस्ट नाका के पास रेड कार्यवाही की गई। दोनों कार सवार से बारीकी से पूछताछ कर तलाशी कार्यवाही किया गया । जिनके कब्जे से 60 किलो ग्राम मादक पदार्थ गांजा एवं मारुति स्विफ्ट डिजायर को जप्त कर कर आरोपियों के विरुद्ध धारा 20 (ख) एनडीपीएस एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध कर गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया।

अवैध रूप से नशे के कारोबार को रोकने में सायबर टीम एवं सिटी कोतवाली गरियाबंद निरीक्षक कृष्णा प्रसाद जांगड़े, सहायक उप निरीक्षक टीकाराम ध्रुव, प्रधान आरक्षक डिगेश्वर साहू, प्रहलाद थानापति, चूड़ामणि देवता, आरक्षक मुरारी यादव, योगेश ठाकुर, कुंदन जगने, रवि सोनवानी की विशेष भूमिका रही।

गिरफ्तार आरोपी

राजेश मंडल पिता बाबूराम मंडल उम्र 29 साल निवासी ओसीसी नगर सीमलिगुढा थाना सोनाबेड़ा जिला कोरापुट(उड़ीसा)

विजय दोरा पिता आनंद दोरा उम्र 34 साल निवासी जंगमपुट थाना सीमलिगुढा जिला कोरापुट (उड़ीसा)

जप्त सामग्री- 60 किलो ग्राम मादक पदार्थ गांजा कीमती 6,00,000रू0

निर्वाचन गतिविधियों के संबंध में अधिकारियों को दिया गया विशेष प्रशिक्षण

मोहला(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री एस जयवर्धन की विशेष मौजूदगी में कलेक्टोरेट सभागार में निर्वाचन कार्य के संबंध में नियुक्त सभी जांच दलों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिला मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी में निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण चुनाव की तैयारी के परिपेक्ष में समस्त सुरक्षा एवं जांच दलों के लिए एक विशेष प्रशिक्षण आयोजित हुआ। इस प्रशिक्षण को जिला स्तरीय प्रशिक्षक श्री धर्मेन्द्र सारस्वत तथा श्री सईद कुरैशी के साथ श्री बालमुकुंद मिश्रा, श्री अजय तिवारी, श्री विजय सिंह एवं यदु ने संयुक्त रूप से प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण से विभिन्न दलों का कार्य निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण चुनाव के आयोजन को मजबूत आधार देना है। निर्वाचन संबंधी विभिन्न विषय पर विशेष प्रशिक्षण देकर अधिकारियों को निर्वाचन के लिए पूरी शिद्दत के साथ गंभीरता पूर्वक कार्य करने निर्देशित किया गया है। प्रशिक्षण में डिप्टी कलेक्टर श्री अविनाश ठाकुर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री हेमंत ठाकुर क्रमश: ए आर ओ और प्रशिक्षण प्रभारी के द्वारा निर्वाचन के दौरान बरती जानी वाली बारीकियों एवं सावधानियां पर विशेष दिशा निर्देश दिया गया। कलेक्टर श्री एस जयवर्धन ने प्रशिक्षण को ज्यादा प्रभावी बनाने के लिए व्यावहारिक पक्ष पर ज्यादा ध्यान देने की बात कही। सभी दलों का उत्साहवर्धन करते हुए आवश्यक मार्गदर्शन दिया। विधानसभा निर्वाचन कार्य में निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण आयोजन के लिए निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निर्देशों की जानकारी से आवत कराया। ए आर ओ श्री अविनाश ठाकुर ने बताया कि यह चुनाव पूर्व तैयारी प्रशिक्षण है। आचार संहिता प्रभावी होते ही औपचारिक विशेष प्रशिक्षण शुरू हो जाएगा।

दौड़ लगायेगा कांकेर-मतदान करेगा कांकेर थीम पर मैराथन दौड़ का आयोजन

कांकेर(विश्व परिवार)। कलेक्टर डॉ. प्रिंयका शुक्ला के निर्देशानुसार एवं जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री सुमीत अग्रवाल नोडल अधिकारी स्वीप कार्यक्रम कांकेर के मार्गदर्शन में जिला मुख्यालय एवं जिले के प्रत्येक विकासखंडों में गत दिवस दिन शनिवार को प्रात: 07 बजे से मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। शासकीय नरहदेव उत्कृष्ट विद्यालय खेल परिसर कांकेर में पद्मश्री श्री अजय मंडावी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न किया गया। ''दौड लगायेगा कांकेर- मतदान करेगा कांकेर'' थीम पर मतदाता जागरूकता अभियान स्वीप कार्यक्रम के तहत मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। जिले में संचालित शासकीय महाविद्यालयों, डाईट कॉलेज, मॉडल कॉलेज तथा हायर सेकण्डरी के युवा छात्र-छात्राओं के धावक छात्रों के द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान के तहत मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया, जिसमें बालक वर्ग से 50 एवं बालिका वर्ग से 72 छात्राओं ने भाग लिया। मैराथन दौड़ शासकीय नरहरदेव उत्कृष्ट विद्यालय कांकेर से प्रारंभ होकर कोमलदेव चैक कांकेर तक आयोजित किया गया, जिसमें बालक वर्ग में प्रथम स्थान पर रामकरण कोड़ोपी, द्वितीय स्थान पर विजेन्द्र कुमार एवं तृतीय स्थान पर सोमारूराम पोडियाम, चैथा हेमन्त वर्मा, पॉचवा दीपक पांडे, छठा त्रिलोचन, सातवॉ नेमीचंद, आठवॉ योगेश कोड़ोपी, नौवॉ भोलाराम उसेण्डी तथा दसवॉ स्थान पूनम यादव का रहा है।

मतदाता सूची के प्रकाशन के संबंध में सभी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करें - कलेक्टर डोमन सिंह

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री डोमन सिंह ने मतदाता सूची के अंतिम प्रकाशन की तैयारी सहित निर्वाचन के कार्यों के संबंध में कलेक्टोरेट शक्तिकक्ष में बैठक ली। कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन 4 अक्टूबर 2023 को किया जाएगा। इसकी पूरी तैयारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने मतदाता सूची की छपाई सावधानी पूर्वक करने के निर्देश सभी रिटर्निंग अधिकारियों को दिए। कलेक्टर श्री सिंह ने मतदान केन्द्रों में सारी व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। मतदान केन्द्रों में रैम्प सहित अन्य आवश्यक व्यवस्था अनिवार्य रूप से करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि स्ट्रॉग रूम के लिए सभी एसडीएम पूरी तैयारी रखें। स्ट्रांग रूम में फायर फायटर और डबल लॉक की सुविधा रखने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी एसडीएम को हेलीपेड एवं सभा के लिए स्थान चिन्हांकित कर सभी व्यवस्था करने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्वाचन कार्य में लगी सभी टीमों के लिए बैठक व्यवस्था एवं अन्य आवश्यक उपकरण की व्यवस्था सुनिश्चित करने कहा। कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि 3 सितम्बर को एफएसटी, वीवीटी, वीएसटी, मीडिया सेंटर सहित अन्य टीम द्वारा किए जा रहे कार्यों का रिहर्सल किया जाएगा। सभी नोडल अधिकारियों को इसकी पूरी तैयारी करने के निर्देश दिए। सभी एसडीएम को कंट्रोल रूम में तीन शिफ्ट में ड्यूटी लगाने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि 4 सितम्बर को सभी चेकपोस्ट में एसएसटी की टीम द्वारा किए जा रहे कार्यों का रिहर्सल किया जाएगा। उन्होंने 80 वर्ष से अधिक बुजुर्ग एवं दिव्यांगजनों के होम वोटिंग के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सिंह ने भारत निर्वाचन आयोग से आने वाले प्रेक्षक के लिए रेस्ट हाउस आरक्षित करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही कर्मचारियों की ड्यूटी और अन्य व्यवस्था करने के निर्देश दिए।

गरियाबंद पुलिस को मिली सफलता तेंदुआ खाल के साथ एक आरोपी गिरफ्तार

सायबर टीम गरियाबंद एवं थाना पिपरछेडी की कार्यवाही

गरियाबंद (विश्व परिवार)। जिला गरियाबंद क्षेत्र में हो रहे अवैध रूप से गांजा, हीरा, शराब, वन्य प्राणियों के अवैध तस्करी को रोकने के लिए जिला गरियाबंद के उमनि/ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अमित तुकाराम काम्बले के दिशा-निर्देश, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डी. सी. पटेल के मार्गदर्शन, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस गरियाबंद पुष्पेंद्र नायक के पर्यवेक्षण में विशेष अभियान चलाया जा रहा हैं। जिसके परिणाम स्वरूप अवैध तस्करों पर लगातार कार्यवाही की जा रही है। आज दिनांक 02.10.2023 को जरिये मुखबिर से सूचना मिला कि ग्राम चिंगरमाल जाने के कच्ची ज़मार्ग पर एक व्यक्त लाल रंग के थैलें में वन्य प्राणी तेन्दुआ कि खाल को भरकर ग्राहक की तलाश करते हुये ग्राम चिंगरमाल के तरफ आ रहे हैं, कि सूचना पर तत्काल कार्यवाही करते हुये हमराह प्रधान आरक्षक 270 रवि लहरे के मुखबीर के बताये घटना स्थल के लिए रवाना हुए ग्राम रसेला में समक्ष गवाहन के मौका घटना स्थल मुखबीर से बताए अनुसार एक व्यक्ति जो ग्राम चिंगरमाल जाने वाले

कच्ची मार्ग पर लाल रंग का थैला रखकर पैदल ग्राम चिंगरमाल की ओर जा रहा था जिसे रोककर उनका नाम पुछने पर नंद कुमार ठाकुर पिता मया राम ठाकुर उम्र 45 वर्ष साकिन स्कूल पारा ग्राम रसेला थाना छुरा जिला गरियाबंद का होना बताया उक्त व्यक्ति का तलाशी लिया गया जिसके पास से संदिग्ध वन्य जीव का खाल बरामद किया गया। वन्य प्राणी तेन्दुआ खाल किमती अनुमानित रकम 4,00,000 रूपये को जप्त कर सीलबंद किया गया व आरोपी का कृत्य अपराध वन्य जीव सरंक्षण अधिनियम 1972 की धारा 9,29,39,51 की पाए जाने से अपराध पणजी मत कर विवेचना में लिया गया। आरोपी को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय पेश किया गया। थाना प्रभारी पेपरछेड़ी निरीक्षक संतोष साहू, प्रधान आरक्षक 270 रवि लहरे, आरक्षक 537 घनश्याम जांगडे हमारा स्टाफ के साथ स्पेशल टीम गरियाबंद प्रधान आरक्षक 84 मनीष वर्मा, आरक्षक *454 सुशील पाठक, 168 गंगाधर सिन्हा, 206 अजय राजपुत, 611 चुमेश्वर ध्रुव, की भूमिका सराहनी रही।

मूल नाम नंद कुमार ठाकुर पिता माया राम ठाकुर उम्र 45 वर्ष साकिन स्कूल पारा रसेल ग्राम थाना छुरा जिला गरियाबंद

www.vishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@yahoo.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर, मंगलवार 03 अक्टूबर 2023

स्वप्ना पदक की दौड़ से बाहर, अमलान पुरुष 200 मीटर सेमीफाइनल में

हांगझोउ(एजेंसी)। गत चैंपियन भारत की हेप्टाथलन खिलाड़ी स्वप्ना बरमन चोटों से जूझने के कारण रविवार को यहां भाला फेंक स्पर्धा के बाद एशियाई खेलों की हेप्टाथलन स्पर्धा से पदक की दौड़ से लगभग बाहर हो गईं। भाला फेंक में 52.55 मीटर का निजी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली स्वप्ना दो दिवसीय कड़ी प्रतियोगिता की इस स्पर्धा में 45.13 मीटर का सर्वश्रेष्ठ प्रयास ही कर सकीं। सात स्पर्धाओं की इस प्रतियोगिता में अब सिर्फ एक स्पर्धा बची है। स्वप्ना ने 2018 में एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय हेप्टाथलन खिलाड़ी

बनने के दौरान जो दो स्पर्धाएं जीती थी उनमें भाला फेंक भी शामिल था। कुल मिलाकर स्वप्ना 4840 अंक के साथ चौथे स्थान पर चल रही हैं। वह अपनी निकटतम प्रतिद्वंद्वी चीन की जिंगयी ल्यु से 11 अंक पीछे है। सात स्पर्धा की इस प्रतियोगिता में अब सिर्फ 800 मीटर दौड़ बची है। स्पर्धा में हिस्सा ले रही एक अन्य भारतीय नंदिनी अगासरा भाला फेंक में 39.88 मीटर के प्रयास के बाद पांचवें स्थान पर चल रही हैं। इससे पहले स्वप्ना ने लंबी कूद में 5.71 मीटर जबकि नंदिनी ने 5.94 मीटर का प्रयास किया। रीढ़ की हड्डी की चोट से जूझने के बाद स्वप्ना पिछले साल संन्यास पर विचार कर रहीं थी लेकिन उन्होंने हांगझोउ में अपने खिताब की रक्षा करने और अंतिम बार एशियाई खेलों में उतरने का फैसला किया। स्वप्ना ने इस साल अंतर राज्यीय प्रतियोगिता जीती और एशियाई खेलों से पहले रजत पदक भी हासिल किया। ट्रेनिंग जारी करने के लिए उन्होंने सर्जरी नहीं कराने का फैसला किया। स्वप्ना के कोच सुभाष सरकार ने कहा, उसका शरीर बोझ नहीं उठा पाया और वह अच्छी शुरुआत करने में सफल रही।'' उन्होंने कहा, उसे ऊंची कूद में अच्छे नतीजे की उम्मीद थी लेकिन चौथे स्थान ने उसे तोड़ दिया और वह उससे उबर नहीं पाई।'' स्वप्ना ने ऊंची कूद में 1.70 मीटर का प्रयास किया जो उनके 1.87 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के आसपास भी नहीं है। इससे पहले अमलान बोरगोहेन पुरुष 200 मीटर हीट में 21.08 सेकेंड के समय के साथ तीसरे स्थान पर रहते हुए सेमीफाइनल में पहुंच गए। नियमों के अनुसार प्रत्येक हीट (शुरुआती दौर) में शीर्ष तीन में रहने वाले खिलाड़ी सेमीफाइनल में जगह बनाते हैं। प्रत्येक हीट से शीर्ष तीन धावकों के बाद सभी हीट में चार सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को भी सेमीफाइनल में जगह मिलती है। देश के सबसे तेज पुरुष धावक असम के अमलान के नाम अभी पुरुष 100 मीटर और 200 मीटर दोनों राष्ट्रीय रिकॉर्ड हैं। ज्योति याराजी हालांकि महिला 200 मीटर फाइनल में जगह बनाने में नाकाम रहीं। उन्होंने 23.78 सेकेंड का समय लिया।

व्यापार समाचार

गूगल बार्ड को आपके बारे में जानकारी रखने के लिए मिल सकता है 'मेमोरी' फीचर

सैन फ्रांसिस्को(एजेंसी)। गूगल के जेनरेटिव एआई चैटबॉट और चैटजीपीटी प्रतिद्वंद्वी बार्ड को एक नया मेमोरी फीचर मिल सकता है जो आपके और आपकी प्राथमिकताओं के बारे में महत्वपूर्ण विवरण याद रखेगा। मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। 9टू5गूगल द्वारा देखे गए बार्ड के यूआई के शुरुआती संस्करण के अनुसार, यह सुविधा एआई चैटबॉट को आपके द्वारा साझा किए गए विशिष्ट विवरणों पर नज़र रखने और भविष्य के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए उनका उपयोग करने देगी। इसका मतलब यह है कि आपको व्यंजनों या छुट्टियों के सुझावों के लिए संकेत देते समय बार्ड को यह याद दिलाने की ज़रूरत नहीं होगी कि आप मांस खाने से बचते हैं, या कि आपके दो बच्चे हैं। इसके अलावा, रिपोर्ट में कहा गया है कि मेमोरी पेज से, आप नई प्राथमिकताए जोड़ सकेंगे। संभवत: यही पृष्ठ आपको उन स्मृतियों को हटाने की अनुमति देगा, जो गलत या अवांछनीय हैं। गोपनीयता बनाए रखने के लिए, स्क्रीन के बाईं ओर एक टॉगल आपको बार्ड की मेमोरी को जल्दी और आसानी से बंद करने की अनुमति देगा। रिपोर्ट में बताया गया है कि इससे उन वार्तालापों को शुरू करना आसान हो जाएगा, जो यादों पर आधारित नहीं हैं, जैसे कि बार्ड को किसी मित्र को दिखाना या चैटबॉट से उन विषयों के बारे में पूछना, जिन्हें आप अगली बार याद नहीं रखना चाहेंगे। इस बीच, गूगल ने बार्ड का एक अधिक सक्षम संस्करण जारी किया है, जो अब अधिक उपयोगी प्रतिक्रियाओं के लिए जीमेल, डॉक्स, ड्राइव, मैप्स, यूट्यूब और गूगल फ्लाइट्स और होटल्स सहित गूगल ऐप्स और सेवाओं के साथ एकीकृत होता है। कंपनी ने कहा कि उसने बार्ड के उत्तरों की दोबारा जांच करने और अधिक स्थानों तक पहुंच बढ़ाने के लिए गूगल इट सुविधा में भी सुधार किया है।

एजिलस डायग्नोस्टिक्स लिमिटेड ने सेबी के पास दाखिल किया डीआरएचपी

नईदिल्ली (एजेंसी)। डायग्नोस्टिक सेवा प्रदाता एजिलस डायग्नोस्टिक्स लिमिटेड (कंपनी) ने बाज़ार नियामक, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है। कंपनी इक्विटी शेयरों (अंकित मूल्य 10 प्रति शेयर) की इनिशियल पब्लिक ऑफर (प्रारंभिक सार्वजनिक पेशकश -आईपीओ) के ज़रिये धन जुटाने की योजना बना रही है। इस ऑफर में मौजूदा शेयरहोल्डर द्वारा बेचे जा रहे 14,233,964 इक्विटी शेयर तक का ऑफर फॉर सेल शामिल है। कंपनी प्रयोगशालाओं की संख्या के लिहाज़ से सबसे बड़ी डायग्नोस्टिक्स सेवा प्रदाता है और 31 मार्च, 2023 को समाप्त वित्त वर्ष के लिए, भारत में परिचालन से दर्ज आय (रेवेन्यू) के हिसाब से दूसरी सबसे बड़ी कंपनी है। (स्रोत: क्रिसिल रिपोर्ट)। शेयरधारकों की ऑफर फॉर सेल में इंटरनेशनल फाइनेंस कॉरपोरेशन एल के 2,985,075 इक्विटी शेयर, एनवाईएलआईएम जैकब बैलास इंडिया फंड ड्डढ्ढ एलएलसी के 7,462,700 इक्विटी शेयर और रिसर्जेंस पीई इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के 3,786,189 इक्विटी शेयर शामिल हैं।

फेसटिवल सीजन से पहले आम आदमी को तगड़ा झटका, एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में भारी बढ़ोतरी

नई दिल्ली(एजेंसी)। लाखों उपभोक्ताओं के लिए एक बड़ा झटका देते हुए, तेल विपणन कंपनियों (ओएमसी) ने रविवार से वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में 209 रुपये की बढ़ोतरी की है। उद्योग के सूत्रों ने यह जानकारी दी। कीमतों में बढ़ोतरी के बाद नई दिल्ली में 1 अक्टूबर से 19 किलोग्राम वाले वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर की कीमत अब 1,731.50 रुपये होगी। इस बढ़ोतरी के तत्काल प्रभाव से बाहर खाना महंगा हो जाएगा। यह फैसला ओएमसी द्वारा 1 सितंबर से वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में 158 रुपये की भारी कटौती करने के ठीक एक महीने बाद आया है, जिससे राष्ट्रीय राजधानी में उनकी कीमत 1,522 रुपये हो गई थी। वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में ताजा बढ़ोतरी केंद्र द्वारा अगस्त में देशभर के सभी कनेक्शन धारकों के लिए घरेलू एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में 200 रुपये की कटौती के ठीक एक महीने बाद हुई है। वाणिज्यिक और घरेलू एलपीजी (तरलीकृत पेट्रोलियम गैस) दोनों सिलेंडरों के लिए मासिक संशोधन प्रत्येक महीने के पहले दिन किया जाता है। इससे पहले अगस्त में भी ओएमसी ने कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में 99.75 रुपये की कटौती की थी।

भारत में यूट्यूब, शॉर्ट्स के मौद्रीकरण से गूगल को भविष्य के लिए काफी उम्मीद

नई दिल्ली(एजेंसी)। गूगल के स्वामित्व वाला यूट्यूब अधिकांश भारतीयों के लिए स्ट्रीमिंग के साथ-साथ कंटेंट क्रिएट करने के लिए एक प्रमुख विकल्प बन गया है। तकनीकी दिग्गज अब बड़े पैमाने पर मंच का मौद्रीकरण करने की प्रक्रिया में है। साथ ही निर्माता की आमदनी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ाने में भी मदद कर रहा है। यूट्यूब अब भारत में हर पांच ऑनलाइन लोगों में से चार का पसंदीदा मंच बन गया है।इसके शॉर्ट-वीडियो-मेकिंग ऐप शॉर्ट्स की लोकप्रियता भी बढ़ी है। देश में 18 से 44 वर्ष के 96 प्रतिशत लोग यूट्यूब शॉर्ट्स का उपयोग करते हैं। कंपनी के अनुसार, वैश्विक स्तर पर औसतन 70 अरब दैनिक व्यूज के साथ भारतीय दर्शकों के बीच यूट्यूब शॉर्ट्स की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। फरवरी में, गूगल ने इंस्टाग्राम रील्स के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए आधिकारिक तौर पर क्रिएटर्स के साथ यूट्यूब शॉर्ट्स पर विज्ञापन राजस्व साझा करना शुरू किया। इससे पहले, क्रिएटर्स को प्लेटफॉर्म पर केवल लंबे वीडियो से कमाई होती थी। देश में पिछले 12 महीनों में टीवी पर शॉर्ट-वीडियो कंटेंट देखने वाले 88 प्रतिशत ऑनलाइन लोग 18-44 साल के थे। गूगल इंडिया के निदेशक एवं मार्केटिंग पार्ट्नर सत्य राघवन कहा, भारत में यूट्यूब लॉन्च करने के बाद से 15 साल में कनेक्टिविटी और कंटेंट में एक असाधारण सर्वांगीण डिजिटल परिवर्तन हुआ है।

अदिति आखिरी दौर में फिसली, महिला गोल्फ में रजत से होना पड़ा संतुष्ट

हांगझोउ(एजेंसी)। भारतीय गोल्फर अदिति अशोक एशियाई खेलों की महिला गोल्फ स्पर्धा के आखिरी दिन रविवार को यहां अपनी लय बरकरार नहीं रखी सकी और 73 का निराशाजनक कार्ड खेलकर रजत पदक अपने नाम किया। महिला गोल्फ में यह भारत का पहला पदक है। अदिति के पास तीसरे दौर के बाद तालिका में शीर्ष पर सात शॉट की बड़ी बढ़त थी। उन्होंने एक बर्डी के मुकाबले चार बोगी और एक डबल बोगी कर के इस बढ़त को गंवा दिया और दूसरे स्थान पर खिसक गयी। इस पच्चीस साल की खिलाड़ी का कुल स्कोर 17 अंडर 271 रहा। थाईलैंड की

अर्पिचया युबोल ने सप्ताह का सर्वश्रेष्ठ 64 का कार्ड खेल कर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। कोरिया की ह्युनजो यू ने भी 65 का शानदार कार्ड खेलकर कांस्य पदक जीता। इस स्पर्धा में भाग ले रही भारत की दो अन्य महिलाएं प्राणवी उर्स (13वां स्थान) और अवनी प्रशांत (संयुक्त 18वां स्थान) ने भी आखिरी दिन निराशा किया। प्राणवी ने 75 जबकि अवनी ने 76 का कार्ड खेला जिससे भारत टीम स्पर्धा में चौथे स्थान पर खिसककर पदक से चूक गयी। अदिति स्वर्ण पदक से चूक गयी लेकिन दो बार की इस ओलंपिक खिलाड़ी ने अपने प्रदर्शन से प्रभावित किया। वह तोक्यो ओलंपिक में भी मामूली अंतर से पिछड़ कर चौथे स्थान पर रही थी। यह गोल्फ में भारत का चौथा व्यक्तिगत पदक था। लक्ष्मण सिंह और शिव कपूर ने 1982 और 2002 सत्र में स्वर्ण पदक जीता था जबकि राजीव मेहता ने नयी दिल्ली (1982) में रजत पदक जीता था।

मुक्केबाज परवीन ने एशियाई खेलों में पदक के साथ ओलंपिक कोटा सुनिश्चित किया

हांगझोउ,(एजेंसी)। विश्व चैम्पियनशिप की कांस्य पदक विजेता भारतीय मुक्केबाज परवीन हुड्डा ने महिलाओं की 57 किग्रा स्पर्धा के सेमीफाइनल में जगह बनाकर एशियाई खेलों में पदक सुनिश्चित करने के साथ पेरिस ओलंपिक कोटा हासिल किया। विश्व चैम्पियनशिप में 63 किग्रा में पदक जीतने वाली परवीन ने रविवार को उज्बेकिस्तान की सितोरा तर्डिबेकोवा को सर्वसम्मत फैसले से हराया। इस मुकाबले में मौजूदा एशियाई चैंपियन शुरू से ही अपने लय में दिखी। उन्होंने अपनी लंबाई का फायदा उठाते हुए 21 साल की प्रतिद्वंद्वी को बाएं और दाएं दोनों ओर से मुक्के जड़े। परवीन ने शुरुआती दौर में

आक्रामक रवैया अपनाया लेकिन इसके बाद तर्डिबेकोवा को अपने करीब आने का मौका दिया और फिर सटीक पंच जड़े। तर्डिबेकोवा ने भी इस दौरान कुछ अच्छे मूव बनाकर परवीन को पंच जड़े लेकिन यह काफी नहीं था। दो बार की विश्व चैंपियन निकहत जरीन (50 किग्रा), प्रीति पवार (54 किग्रा), लवलीना बोरगोहेन (75 किग्रा) और नरेंद्र बेरवाल (92 किग्रा से अधिक) पहले ही अपने-अपने वर्ग में ओलंपिक कोटा हासिल कर चुके हैं। महिला वर्ग में 50 किग्रा, 54 किग्रा, 57 किग्रा और 60 किग्रा में सेमीफाइनल में पहुंचने वाले और 66 किग्रा तथा 75 किग्रा में फाइनल में पहुंचने वाले मुक्केबाजों को पेरिस ओलंपिक का कोटा मिलेगा । पुरुष वर्ग में सात वजन वर्गों से स्वर्ण और रजत पदक विजेताओं को ओलंपिक कोटा मिलेगा।

प्रोडक्शन में कटौती के कारण सैमसंग को तीसरी तिमाही में चिप घाटा कम होने की संभावना

सोल(एजेंसी)। सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स को तीसरी तिमाही में अपने चिप घाटे को कम करने की उम्मीद है, जिसका मुख्य कारण इसके चिप आउटपुट में निरंतर कटौती है। दुनिया की सबसे बड़ी मेमोरी चिप निर्माता कंपनी सैमसंग ने इस साल की शुरुआत में अपने चिप उत्पादन में कटौती की और देर से ही सही, एसके हाइनिक्स इंक और माइक्रोन टेक्नोलॉजी इंक जैसे अपने साथियों के साथ शामिल हो गई, जिन्होंने लगातार आपूर्ति की समस्या को हल करने के लिए पिछले साल के अंत में उत्पादन में कटौती शुरू कर दी थी। समाचार एजेंसी योनहाप की रिपोर्ट के अनुसार, केबी सिक्योरिटीज के विश्लेषक किम डोंग-वॉन ने अनुमान लगाया है कि सैमसंग के

डिवाइस सॉल्यूशंस (डीएस) डिवीजन को तीसरी तिमाही में लगभग 4 ट्रिलियन वॉन (2.96 बिलियन) का घाटा होगा, जो दूसरी तिमाही के 4.35 ट्रिलियन वॉन से कम है। उन्होंने कहा कि सैमसंग ने दूसरी छमाही से अपने उत्पादन में कटौती को पहली छमाही के क्रमशः 20 प्रतिशत और 30 प्रतिशत से बढ़ाकर डीआरएएम के लिए 30 प्रतिशत और एनएएनडी फ्लैश के लिए 40 प्रतिशत कर दिया है। सैमसंग के डीएस डिवीजन ने पहली तिमाही में 4.6 ट्रिलियन वॉन का परिचालन घाटा दर्ज किया, जो 14 सालों में इसका पहला वित्तीय घाटा था, क्योंकि वैश्विक मांग में कमी के बीच चिप इन्वेंट्री में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इससे पहले, डिवीजन ने 2009 की पहली तिमाही में घाटा दर्ज किया था। क्योबो सिक्योरिटीज के एक विश्लेषक चोई बो-यंग ने कहा कि उत्पादन में कटौती, और अधिक संतुलित आपूर्ति और मांग की गतिशीलता ने मेमोरी चिप की कीमतों को बढ़ावा देना शुरू कर दिया है, निष्क्रिय पड़ी विनिर्माण सुविधाओं से निपटने के लिए बढ़ी हुई निश्चित कीमतों ने भी मुनाफे पर असर डाला है। हनवा इन्वेस्टमेंट एंड सिक्योरिटीज के विश्लेषक किम क्वांग-जिन ने सैमसंग के चिप प्रदर्शन को बाजार की उम्मीदों से कम रहने का अनुमान लगाया है, क्योंकि कंपनी को अपने चिप व्यवसाय को पूरी तरह से ठीक करने में पहले की अपेक्षा अधिक समय लग रहा है।

2000 के नोटों को बदलने की अवधि बढ़ी, अब 7 अक्तूबर तक बदलवा सकेंगे नोट

मुंबई(एजेंसी)। आरबीआई ने 2000 रुपये के नोटों को बदलने, जमा करने की समय सीमा बढ़ा दी है। इस समय सीमा को 30 सितंबर से बढ़ाकर 7 अक्टूबर तक कर दिया गया है। मई में रिजर्व बैंक ने 2000 रुपये के नोट को

वापस लेने का ऐलान किया था। रिजर्व बैंक की ओर से जारी एक बयान में बताया गया है कि नई डेडलाइन खत्म होने के बाद यानी 8 अक्टूबर से 2000 रुपये के बैंक नोटों को जमा/बदलने की प्रक्रिया बंद कर दी जाएगी। प्रेस रिलीज के जरिए इसकी जानकारी दी है। प्रेस रिलीज के जरिए आरबीआई ने कहा कि 2000 रुपये के नोट को वापस लेने की प्रक्रिया खत्म होने पर इसके रिव्यू के आधार पर फैसला किया गया कि इसे आगे खिसकाया जाए। ऐसे में इसकी डेडलाइन 7 अक्टूबर तक बढ़ा दी गई है। कहा कि ये नोट लीगल टेंडर बने रहेंगे। इससे पहले इसी साल 19 मई को एक सर्कुलर जारी करके 30 सितंबर तक 2000 के नोट बैंकों में जमा करने या बदलने के लिए कहा था। बैंकों से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 19 मई 2023 तक कुल 3.56 लाख करोड़ रुपए मूल्य (वैल्यू) के ?2000 के नोट प्रचलन में थे। इसमें से 29 सितंबर तक ?3.42 लाख करोड़ वैल्यू के नोट वापस आ चुके हैं।

मोदी सरकार की नीतियों का अधिक लाभ युवाओं और महिलाओं को मिले : अमित शाह

नईदिल्ली (एजेंसी) केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा देश के 75 सालों के लोकतांत्रिक सफर और पिछले 9 वर्षों की उपलब्धियों को गिनाया। इस दौरान शाह ने कहा कि, 'मोदी सरकार की नीतियों का अधिक लाभ युवाओं और महिलाओं को मिले, इसके लिए पीएचडीसीसीआई को भी एक इकोसिस्टम तैयार करना चाहिए।' मोदी की दूरदर्शिता और शाह के नीतिगत निर्णयों से बीते 9 सालों में हर क्षेत्र में देश का कायाकल्प हुआ है। 'उभरता भारत: यही समय है, सही समय है' थीम चुनने के लिए पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री की टीम को बधाई देते हुए शाह ने संदेश दिया कि जी20, चंद्रयान-3 मिशन, आदित्य एल-1 मिशन की सफलता और महिला आरक्षण बिल के पास होने जैसी घटनाओं ने देश भर में एक नई ऊर्जा भर दी है। आज भारत में लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हो चुकी हैं। मोदी सरकार द्वारा लाई गई नई शिक्षा नीति के कारण आने वाले वर्षों में भारत दुनिया भर के छात्रों के लिए सबसे अच्छा डेस्टिनेशन साबित होने वाला है। संकल्प से सिद्धि के इस सफर में शाह का स्पष्ट मानना है कि जब देश आजादी की शताब्दी मना रहा होगा उस वक्त हर क्षेत्र में भारत सबसे आगे होगा, क्योंकि सबसे ज्यादा युवा, सबसे ज्यादा आबादी वाला देश, सबसे ज्यादा डॉक्टर, इंजीनियर और टेक्नोक्रैट्स भारत में हैं। अगर साल 2014 के बाद के भारत को देखा जाए तो पता चलता है कि मोदी-शाह की जोड़ी ने अपने हर वादे को निभाया। यही कारण है कि साल 2014 में हम विश्व की 11वीं नंबर की अर्थव्यवस्था थे और साल 2023 में दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरे हैं। इतना ही नहीं, साल 2027 तक भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। 2013-14 में देश में 4 यूनिकॉर्न स्टार्टअप और 350 स्टार्टअप थे, आज 115 यूनिकॉर्न और 1 लाख से अधिक स्टार्टअप के साथ भारत दुनिया के प्रमुख देशों में से एक है। एक दौर था जब मेक इन इंडिया कार्यक्रम का मजाक उड़ाया जाता था, आज भारत उत्पादन के क्षेत्र में रिकॉर्ड तोड़ रहा है। देश के अंदर 14 सेक्टर में पीएलआई स्कीम ने मेक इन इंडिया के स्वप्न को साकार किया है। आज पूरे विश्व में भारत को वाइब्रेंट स्पॉट के रूप में जाना जाता है।

छात्रों और युवाओं को तंबाकू के नुकसान से बचाने के लिए गांधी जयंती पर लॉन्च किया गया नया अभियान प्रॉमिस टू प्रोटेक्ट

नईदिल्ली (एजेंसी) वैश्विक युवा तंबाकू सर्वेक्षण-4 (2019)के मुताबिक, भारत में 38 प्रतिशत सिगरेट, 47 प्रतिशत बीड़ी पीने वाले और52 प्रतिशत धुआं रहित तंबाकू का सेवन करने वाले अपने 10वें जन्मदिन सेपहले इसका उपयोग शुरू कर देते हैं। गांधी जयंती पर, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने डिजिटल कॉन्फ्रेंस में एक नया अभियान 'प्रॉमिस टूप्रोटेक्ट' लॉन्च किया है, जिसमें पूरे भारत से 1,000 से ज्यादा शिक्षकों कोजोड़ा जाएगा और उन्हें छात्रों एवं युवाओं को तंबाकू की लत से बचाने औरअपने स्कूलों को तंबाकू मुक्त रखने की प्रतिज्ञा दिलाई जाएगी। प्रॉमिस टूप्रोटेक्ट एक सम्मोहक डिजिटल अभियान है, जिसमें प्रतिज्ञा भी शामिल है, जिसका उद्देश्य तंबाकू के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदाकरना और युवाओं को तंबाकू का सेवन शुरू करने से रोकने की दिशा मेंप्रयास करना है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा तंबाकूमुक्त शैक्षणिक संस्थानों पर जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप, यह अभियानभारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य को सुरक्षित बनाना और इसे बढ़ावा देनाचाहता है। प्रसिद्ध टेलीविजन अभिनेता और प्रस्तुतकर्ता करणवीर बोहराद्वारा संचालित डिजिटल कॉन्फ्रेंस में प्रख्यात वक्ता और पैनलिस्ट शामिलहुए - जिसमें श्री संजय कुमार, सचिव (स्कूल शिक्षा), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, डॉ. जोसेफ इमैनुएल, निदेशक (शैक्षणिक), केंद्रीयमाध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई), डॉ. पंकज चतुर्वेदी, हेड एंड नेक कैंसरसर्जन, टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल, और डॉ. विशाल राव, ग्रुप डायरेक्टर, हेड एंड नेक सर्जिकल ऑन्कोलॉजी एंड रोबोटिक सर्जरी, एचसीजी कैंसरसेंटर, बेंगलुरु प्रमुख हैं। इनके अलावा, कॉन्फ्रेंस में तंबाकू सेवन के पीड़ितोंको भी आमंत्रित किया गया, जिन्होंने अपनी जीवन यात्रा और तंबाकू सेवनके कारण उत्पन्न संघर्षों के बारे में बात की। देश के युवाओं के लिए एक स्वस्थ और तंबाकू मुक्त भविष्य के निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के संकेत के रूप में 1,000 शिक्षकों और उनके स्कूलों ने एक साथ ऑनलाइन प्रतिज्ञा ली। अब तक लगभग 1 लाख से अधिकस्कूली शिक्षकों और छात्रों द्वारा प्रतिज्ञाएं ली जा चुकी हैं।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, मंगलवार 03 अक्टूबर 2023

पहली बार 42 हजार विद्यार्थियों की पूरक परीक्षा 10 से

रायपुर (विसं)। हेमचंद यादव विश्वविद्यालय की पूरक परीक्षाएं 10 अक्टूबर से शुरू होगी. इस साल विश्वविद्यालय के लिए सबसे बड़ी चुनौती है पूरक परीक्षा में 42 हजार विद्यार्थी शामिल होंगे। इतने विद्यार्थियों के लिए पेपर सेट करना, उसकी छपाई, उत्तरपुस्तिका की व्यवस्था से लेकर परीक्षा केंद्रों की व्यवस्था बिल्कुल मुख्य परीक्षा की तरह करनी पड़ेगी. दरअसल, राज्य शासन ने केवल इस साल के लिए पूरक परीक्षा में दो विषयों की पात्रता दी है.

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज जगदलपुर में विभिन्न रेल परियोजनाओं का करेंगे लोकार्पण

प्रधानमंत्री अंतागढ़ से ताड़ोकी नई रेल लाइन का लोकार्पण एवं बोरीडांड से सूरजपुर रेल लाइन के दोहरीकरण का करेंगे शिलान्यास

प्रधानमंत्री आज ताड़ोकी से रायपुर डेमू ट्रेन सेवा का करेंगे शुभारम्भ

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 03 अक्टूबर 2023 को छत्तीसगढ़ के जगदलपुर, बस्तर की यात्रा पर आएंगे। इस दौरान प्रधानमंत्री जी 03 अक्टूबर को 11 बजे अपराह्न में विभिन्न विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण करेंगे। अवसंरचना विकास को बढ़ावा देते हुए प्रधानमंत्री अनेक रेल परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री जी अंतागढ़ से ताड़ोकी नई रेल लाइन और जगदलपुर से दंतेवाड़ा के बीच डबल रेल लाइन को राष्ट्र को समर्पित करेंगे। इसी के साथ प्रधानमंत्री बोरीडांड से सूरजपुर रेल लाइन के दोहरीकरण परियोजना तथा अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत जगदलपुर स्टेशन के पुनर्विकास की आधारशिला रखेंगे। इस दौरान माननीय प्रधानमंत्री ताड़ोकी से रायपुर डेमू ट्रेन सेवा का हरी झंडी दिखाकर शुभारम्भ भी करेंगे। इन रेल परियोजनाओं से राज्य के जनजातीय इलाकों में कनेक्टिविटी में सुधार होगा। रेल अवसंरचना में सुधार और नई रेल सेवाओं से स्थानीय लोगों को सुविधा होगी तथा इलाके में आर्थिक विकास को मदद मिलेगी।

प्रधानमंत्री अंतागढ़ से ताड़ोकी नई रेल लाइन को राष्ट्र को समर्पित करेंगे। छत्तीसगढ़ के रेल संपर्क विहीन ताड़ोकी क्षेत्र में दल्लीराजहरा रावघाट परियोजना के अंतर्गत 272 करोड़ की लागत से नवनिर्मित 17.65 किलोमीटर लंबी रेल लाइन छत्तीसगढ़ के वनवासी बाहुल्य क्षेत्र को परिवहन का सुलभ, किफायती और तेज साधन उपलब्ध कराएगी। यह लाइन पर्यटन को बढ़ावा देने के अलावा इस्पात संयंत्रों के लिए लौह अयस्क समृद्ध क्षेत्रों से परिवहन सम्पर्क की सुविधा प्रदान करेगा।

प्रधानमंत्री मोदी बोरीडांड से सूरजपुर रेल लाइन के दोहरीकरण का शिलान्यास भी करेंगे। 79 किलोमीटर लम्बी यह परियोजना 775 करोड़ की लागत से पूरी होगी। इस रेल लाइन के दोहरीकरण से रेल परिवहन सुविधा का विस्तार होगा और क्षेत्र में सामाजिक आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। इससे स्थानीय रोजगार सृजन और आसपास के क्षेत्रों से देश के शेष हिस्सों तक कोयले के परिवहन में आसानी होगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ताड़ोकी से रायपुर डेमू ट्रेन सेवा का शुभारम्भ करेंगे। इस सेवा के शुभारम्भ से ताड़ोकी से राजधानी रायपुर के लिए सीधी ट्रेन सेवा शुरू होगी तथा इस क्षेत्र के निवासियों को तेज, सुगम एवं सस्ता परिवहन उपलब्ध होगा। छात्रों को उच्च शैक्षिक संस्थानों एवं मरीजों को अच्छे अस्पतालों तक पहुँच आसान होगी एवं इसके साथ ही इस क्षेत्र का समन्वित तथा चहुंमुखी विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।

ये सारी परियोजनाएं इस क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक विकास में भी सहभागी होगी। पूरे क्षेत्र के पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, आर्थिक गतिविधियों को बल मिलेगा, रो जगार के नए अवसर बढ़ेंगें तथा संपूर्ण क्षेत्र के परिवहन गतिशीलता में वृद्धि होगी।

संक्षिप्त समाचार

बचेली परियोजना के प्रशासनिक भवन में मनाया गया महात्मा गांधी जयंती

रायपुर (विश्व परिवार)। आज दिनाँक 02 अक्टूबर को बचेली परियोजना के प्रशासनिक भवन में गांधी जयंती मनाया गया। इस शुभ दिन के अवसर पर बचेली परियोजना के अधिशासी निदेशक श्री बी. वेंकटश्वरलु द्वारा गांधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। साथ-साथ कार्यक्रम में उपस्थित अन्य सभी ने माल्यार्पण कर गांधी जी को याद किया। इस कार्यक्रम में श्री पी रामय्यन, मुख्य महाप्रबंधक, श्री धर्मेन्द्र आचार्य, महाप्रबंधक (कार्मिक), श्री मधुसूदन राव, महाप्रबंधक (संयंत्र विद्युत), श्री एम एम अग्रवाल, उप महाप्रबंधक (सिविल), श्री गौरंगा घोरई महाप्रबंधक (यांत्रिक) प्लांट, श्री टी शिव कुमार, खानप्रबंधक, श्री जागेश्वर प्रसाद, अध्यक्ष, एसकेएमएस, श्री टी.जे. शंकर राव, सचिव, एसकेएमएस, श्री देबाषीष पॉल, अध्यक्ष, एमएमडब्ल्यू, अन्य विभागाध्यक्षगण तथा कर्मचारीगण सम्मलित हुए थे। अधिशासी निदेशक ने कार्यक्रम के दौरान ही गांधी जी द्वारा दिए गए शिक्षाओं को याद कर जीवन में अमल लाने की बात कही ताकि समाज की प्रगति में हर एक अभिन्न हिस्सा बन सके। कार्यक्रम के अंत में सभी ने मिलकर स्वच्छता मिशन कार्यक्रम आज समापन किया और प्रशासनिक भवन में ही साफ-सफ़ाई करवाई।

ईपीएफओ ने मनाया स्वच्छता ही सेवा अभियान कार्यक्रम

रायपुर (विश्व परिवार)। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय,भारत सरकार, क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर के तहत दिनांक 25 सितंबर को स्वच्छता ही सेवा अभियान की शुरूआत की गई। जिसके तहत समस्त कार्योलयीन कर्मियों द्वारा स्वच्छता की शपथ लेते हुए कार्यालय परिसर एवं आसपास क्षेत्र में कार्यालय प्रमुख श्री अभिषेक कुमार, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-1 के नेतृत्व में सफाई अभियान चलाया गया। इस तारतम्य में दिनांकय 01 अकटूबर को चंदखुरी, कौशल्या माता मंदिर एवं महादेव घाट में भी टीम-02 द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिसमें कार्यालय प्रभारी अभिषेक कुमार, क्षेत्रीय भविष्य निध आयुक्त-1 जयशंकर प्रसाद, क्षेत्रीय आयुक्त-2 एवं अन्य समस्त अधिकारी एवं कर्मचारियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण बैंक ने किया स्वच्छता ही सेवा अभियान का शुभारंभ

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण बैंक ने केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना, स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत स्वच्छता ही सेवा अभियान का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर बैंक द्वारा संजीवनी वृद्धाश्रम गुढ़ियारी के परिसर की साफ सफाई की गई तथा आम, अमरूद जैसे विभिन्न प्रकार के पौधों का वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। इस कार्यक्रम में बैंक के अध्यक्ष श्री आई के गोहिल द्वारा संजीवनी वृद्ध आश्रम के बुजुर्गों को अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध जन दिवस के अवसर पर बधाई दी तथा आश्रम की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए वाटर कूलर और कंप्यूटर सिस्टम प्रदान करने की घोषणा की। इस अवसर पर बैंक के महाप्रबंधक श्री विजय कुमार अग्रवाल, श्री अरविंद मित्तल, सहायक महाप्रबंधक श्री कमलेश कुंदन क्षेत्रीय प्रबंधक श्री अमरजीत सिंह खनूजा, श्री हरविंदर सिंह, श्री संजय गोयल, श्री विजय धुरंधर, श्री मोहित सिंघल, श्री पी.जी बेदी, श्री सुनील शर्मा, श्री नवीन शर्मा एवं बैंक के अन्य अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित रहे।

कोटमसर में स्वच्छता पखवाड़ा : इको फ्रैंडली सामग्रियों के उपयोग पर बल

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत सरकार के मानव विज्ञान सर्वेक्षण निदेशालय, नई दिल्ली, कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान, जगदलपुर एवं ग्राम-कोटमसर के ग्रामीणों द्वारा ग्राम कोटमसर में 'स्वच्छता पखवाड़ा वर्ष 2023' का गत दिवस एक अक्टूबर को शुभारंभ किया गया। ग्राम कोटमसर में धुरवा जनजाति के लोग निवास करते है और आदिम जीवन शैली से ईको फेंडली जीवन उपयोगी सामग्रियों का उपयोग करते आ रहे है। किन्तु वर्तमान में आधुनिकता की दौड़ में प्लास्टिक के अधिक प्रदूषण को देखते हुए ग्रामीणों द्वारा पर्यटकों को प्लास्टिक से निर्मित सामग्रियों के स्थान पर इको फ्रैंडली सामग्रियों का उपयोग किए जाने हेतु संदेश दिया गया। इस वर्ष स्वच्छता अभियान अंर्तगत भारत सरकार के मानव विज्ञान सर्वेक्षण निदेशालय, नई दिल्ली के द्वारा कोटमसर ग्राम का चयन कर स्वच्छता अभियान का शुभारंभ किया गया। स्वच्छता अभियान के शुभारंभ के दौरान ग्राम कोटमसर के ग्रामीणों ने बढ़-चढ़ कर भागीदारी निभाई और अपने घर-आंगन एवं गलीयों की सफाई की। घर के आंगनों में प्रकृति प्रदर्शित रंगोली सजाई गई। इस स्वच्छता अभियान में ईको फ्रेंडली सामग्रियों से निर्मित झाड़ू से लेकर टोकनी तक का उपयोग किया गया।

कांग्रेस ने निकाला 90 विधानसभा क्षेत्रों में भरोसा यात्रा

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा- कांग्रेस भरोसा यात्रा लोगों की जन भावनाओं का प्रतीक

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश के सभी 90 विधानसभा क्षेत्रों में कांग्रेस ने भरोसा यात्रा निकाला। प्रदेश के सभी वरिष्ठ नेता अपने-अपने विधानसभा क्षेत्रों में भरोसा यात्रा में शामिल हुये। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पाटन विधानसभा के सेलूद, गाड़ाडीह, जामगांव, रानीतराई में भरोसा यात्रा में शामिल हुये। प्रभारी कुमारी सेलजा उपमुख्यमंत्री टी.एस. सिंहदेव अंबिकापुर, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज बस्तर में विधानसभा अध्यक्ष डॉ. चरणदास महंत सक्ती, गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू दुर्ग ग्रामीण, प्रभारी सचिव डॉ. चंदन यादव, सह-सचिव विजय जांगिड़ सरगुजा में शामिल हुये। भरोसा यात्रा में हर विधानसभा क्षेत्रों में मोटर साईकिल रैली भी निकाली गयी जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल हुये तथा यात्रा का समापन हर विधानसभा क्षेत्रों में सभा के रूप में हुआ।

कांग्रेस की ओर से आज प्रदेश की हर विधानसभा में गांधी और शास्त्री जयंती पर कांग्रेस भरोसा यात्रा का आयोजन किया गया। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि आज छत्तीसगढ़ के हर समाज का व्यक्ति कह रहा है कि उसे कांग्रेस पर भरोसा है क्योंकि उसने जो कहा वो किया। दूसरी ओर जब रमन सिंह जी के मुख्यमंत्रित्व काल के 15 बरस पूरे होने जा रहे थे तो समाज का हर वर्ग उनसे दुखी था। भाजपा का हर नेता कमीशनखोरी में डूबा हुआ था। भाजपा के 15 साल में किसानों को न 2100 रूपए प्रति क्विंटल का दाम मिला और न हर साल बोनस का वादा पूरा हुआ। दूसरी ओर कांग्रेस ने आते ही कर्ज माफी का वादा पूरा किया और प्रदेश के 18 लाख किसानों के 9000 करोड़ का कर्ज माफ किया। किसानों को 2500 रूपए प्रति क्विंटल देने का वादा निभाया और इस साल तो 2640 रूपए मिल रहे है। भाजपा की मोदी सरकार ने बोनस पर रोक लगाई तो कांग्रेस की भूपेश सरकार ने राजीव गांधी किसान न्याय योजना लागू करके इनपुट सब्सिडी देना शुरू किया। आज छत्तीसगढ़ का किसान देश का सबसे खुशहाल किसान है। इसी तरह छत्तीसगढ़ के आदिवासी देश के सबसे खुशहाल आदिवासी है। भाजपा के राज में आदिवासी महुआ सड़को पर फेंकने पर मजबूर थे, अब कांग्रेस सरकार महुआ 30 रूपए किलो में खरीदती है। इतना ही नहीं अब 7 की जगह 67 तरह के लघु वनोपज समर्थन मूल्य पर खरीदती है। तेंदूपत्ता के संग्राहक खुश हैं कि 2500 की जगह 4000 रुपए प्रति मानक बोरा मिल रहा है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि कुल मिलाकर भाजपा ने जनता का भरोसा गंवा दिया था और कांग्रेस की भूपेश सरकार ने जनता का भरोसा जीता है। हर वर्ग का भरोसा जीता है। प्रदेश के सभी वरिष्ठ नेता अपने-अपने विधानसभा क्षेत्रों में भरोसा यात्रा में शामिल हुये। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पाटन विधानसभा के सेलूद, गाड़ाडीह, जामगांव, रानीतराई में भरोसा यात्रा में शामिल हुये। प्रभारी कुमारी सेलजा उपमुख्यमंत्री टी.एस. सिंहदेव अंबिकापुर, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज बस्तर में विधानसभा अध्यक्ष डॉ. चरणदास महंत सक्ती, गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू दुर्ग ग्रामीण, प्रभारी सचिव डॉ. चंदन यादव, सह-सचिव विजय जांगिड़ सरगुजा में शामिल हुये। भरोसा यात्रा में हर विधानसभा क्षेत्रों में मोटर साईकिल रैली भी निकाली गयी जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल हुये तथा यात्रा का समापन हर विधानसभा क्षेत्रों में सभा के रूप में हुआ।

न्यू गोदवारा और भनपुरी में पात्र लोगों को किया गया पट्टा वितरण

ग्रामीण विधायक सत्यनारायण शर्मा एवं पंकज शर्मा के हाथों वितरण

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर ग्रामीण विधानसभा के अंतर्गत आज भनपुरी एवं न्यु गोदवारा क्षेत्र मे लोगों की बहू उपेक्षित मांग पूरी हो गई है पात्र हितग्राहियों को ग्रामीण विधायक सत्यनारायण शर्मा एवं जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष पंकज शर्मा के द्वारा पट्टा का वितरण किया गया न्यु गोदवारा में जहां ग्रामीण विधायक सत्यनारायण शर्मा ने पट्टा का वितरण किया वहीं भनपुरी में जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष पंकज शर्मा पट्टा वितरण करने पहुंचे थे आपको बता दे की राज्य की महत्वपूर्ण योजनाओं में से एक पट्टा वितरण कार्यक्रम भी है जिसके अंतर्गत लोगों को उनका अधिकार दिया जा रहा है राज्य सरकार के इस महत्वपूर्ण कदम से आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को मालिकाना हक मिल पा रहा है।जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष पंकज शर्मा ने कहा कि यशस्वी मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी की सोच एवं जनहितैषी योजनाओं के कारण आज राजीव गांधी आश्रय योजना के फलस्वरूप गरीब जनता को उनका स्थायी पट्टा का वितरण हो पाया है। सरकार के द्वारा हर क्षेत्र चाहे शिक्षा हो, रोजगार हो, स्वास्थ्य का क्षेत्र हो, कृषि क्षेत्र हो, नवनिर्माण के कार्य हो लगातार नये-नये कार्य किये जा रहे हैं। आम आदमी के जीवन में उनके रहने के लिए घर का महत्व काफी ज्यादा है।

रायपुर रेल मंडल में गांधी जयंती पर विभिन्न स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किए गए

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय रायपुर में मंडल रेल प्रबंधक संजीव कुमार द्वारा दीप प्रज्वलित तथा गांधीजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी

रायपुर (विश्व परिवार)। आज दिनांक 02 अक्टूबर 2023 को गांधीजी की 155 वीं जयन्ती के अवसर पर दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर मंडल कार्यालय एवं सभी प्रमुख स्टेशनों में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। मुख्य स्टेशनों, यूनिटों एवं स्थानों में अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा वृहद स्वच्छता अभियान चलाया गया। गांधीजी के आदर्श वाक्यों को सभी स्टेशनों के उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से प्रसारित किया गया। स्टेशनों तथा प्रमुख स्थानों पर रैली निकाल कर गांधी जी के स्वच्छ भारत के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने की दिशा में कार्य किया गया।

आज इसी कड़ी में मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के प्रांगण में मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार द्वारा दीप प्रज्वलित तथा गांधीजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उनका पुण्य स्मरण करते हुये उन्हें श्रद्धांजलि दी गई तथा उपस्थित अधिकारियों तथा कर्मचारियों को उनके बताये गये मार्ग पर चलने तथा स्वच्छता की दिशा में कार्य करने के प्रति आह्वान किया गया। मंडल रेल प्रबंधक महोदय ने मंडल कार्यालय के सफाई महिला कर्मचारियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि यहां कार्यरत सफ़ाई महिला कर्मचारी बहुत अच्छे से, पूरी निष्ठा, लगन, ईमानदारी से प्रतिदिन सफाई एवं स्वच्छता का कार्य करती हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हमें स्वस्थ रहने के लिए सफाई अभियान सिर्फ गांधी जयंती के दिन ही न चलाकर अपने दैनिक जीवन में प्रतिदिन स्वच्छ परिसर बनाये रखना है। सभी अधिकारियों, कर्मचारियों को सफाई व्यवस्था के लिए जागरूक किया।

इसी कड़ी मे मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के गेट नं 02 से बालाजी चौक क्षेत्र तक मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार के दिशा निर्देश पर सफ़ाई अभियान चलाया गया जिसमें अधिकारियों, कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इसी के साथ मंडल कार्यालय के गार्डन एरिया की सफाई अभियान चलाया गया और सभी ने अपना अपना श्रमदान दे कर महात्मा गांधी जी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा) श्री आशीष मिश्रा एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री आर के साहू तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी गांधीजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उनको सच्ची श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर मंडल के अधिकारीगण तथा कर्मचारीगण भी उपस्थित थे।

लालगंगा पटवा भवन में रचा गया इतिहास, 1008 नवकार कलश अनुष्ठान संपन्न

ललित पटवा ने सर्व समाज का जताया आभार, दिया धन्यवाद

रायपुर (विश्व परिवार)। नवकार महामंत्र जैन धर्म का परम पवित्र और अनादि मूल मंत्र है। इसमें किसी व्यक्ति का नहीं, किंतु संपूर्ण रूप से विकसित और विकासमान विशुद्ध आत्मस्वरूप का ही दर्शन, स्मरण, चिंतन, ध्यान एवं अनुभव किया जाता है। इसलिए यह अनादि और अक्षयस्वरूपी मंत्र है। लौकिक मंत्र आदि सिर्फ लौकिक लाभ पहुँचाते हैं, किंतु लोकोत्तर मंत्र लौकिक और लोकोत्तर दोनों कार्य सिद्ध करते हैं। इसलिए नवकार मंत्र सर्वकार्य सिद्धिकारक लोकोत्तर मंत्र माना जाता है।

नवकार मंत्र हमेशा मानवता के हित का काम करता है, इसमें किसी भगवान का नाम नहीं पर दुनिया में ऐसी कोई ईश्वरीय शक्ति भी शेष नहीं जो इसमें न आयी हो, क्योंकि यह व्यक्तिवाचक नहीं यह महामंत्र गुणवाचक है। यह गुणों की पूजा करता है, कोई भी व्यक्ति इसका जाप करे, यह हर धर्म का-हर व्यक्ति का मंत्र है। इस धरती पर आज तक किसी में भी यह हिम्मत नहीं कि वह महामंत्र में भेद कर सके, क्योंकि यह अभेद्य है। और अगर इस महामंत्र से अभिमंत्रित कलश किसी घर में स्थापित हो जाता है तो उस घर में महापुरुषों की कृपा बरसती है। 2 अक्टूबर का दिन सकल जैन समाज के लिए ऐतिहासिक हो गया है। देश में पहली बार अर्हम विज्जा प्रणेता उपाध्याय प्रवर प्रवीण ऋषि आदि ठाना-2 की पावन निश्रा में लालगंगा पटवा भवन में भव्य 1008 नवकार तीर्थ कलश अनुष्ठान संपन्न हुआ। इस अनुष्ठान के लिए लालगंगा पटवा भवन को भव्य रूप से सजाया गया था। ऐसा लग रहा था मानो 90 महापुरुषों की कृपा बरस रही हो इस अनुष्ठान के लिए। प्रवीण ऋषि और तीर्थेश मुनि ने अनुष्ठान संपन्न कराया। इस अनुष्ठान में 1008 नवकार कलश को अभिमंत्रित किया गया। इस अनुष्ठान में रायपुर, भिलाई, दुर्ग सहित मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, कर्नाटक के भी जैन परिवार शामिल हुए। विदेश में भी बसे जैन परिवारों को इस अनुष्ठान में शामिल होने के लिए ऑनलाइन लिंक उपलब्ध कराया गया था।

उपाध्याय प्रवर ने बताया कि 24 अक्टूबर से 13 नवंबर तक हमारे जीवन का शिखर अनुष्ठान होने वाला है। रायपुर में 21 दिनों तक तीर्थंकर प्रभु महावीर के अंतिम वचनों की अमृत गंगा बहने वाली है। उपाध्याय प्रवर प्रवीण ऋषि की मुखारविंद से श्रावक-श्राविकाएं 24 अक्टूबर से 14 नवंबर तक प्रभु महावीर के वचनों का श्रवण करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रभु महावीर ने अपने अंतिम क्षणों में एक धर्मसभा आयोजित की, जहां 48 घंटों तक परमात्मा के वचन गूँजते रहे। रायपुर में 21 दिनों तक उत्तराध्ययन श्रुतदेव आराधना में भगवान महावीर के अंतिम वचनों का पाठ होगा। उन्होंने बताया कि यह आराधना प्रातः 7.30 से 9.30 बजे तक चलेगी।

इस दौरान धर्मसभा में प्रभु महावीर के आलावा कोई जयकारा नहीं होगा। धर्मसभा के बाद उपाध्याय प्रवर एकांतवास में रहेंगे। 21 दिनों तक भावना भरनी है कि मस्तक झुके तो केवल महावीर के सामने। सभा में महावीर के अलावा कोई और चर्चा नहीं होगी, मंगलपाठ के साथ सभा का समापन होगा। उन्होंने बताया की देश के अन्य हिस्सों में इस कार्यक्रम के जरिये वे जैन समाज को जोड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है कि उत्तराध्ययन को सर्वोच्च शिखर पर रखना है। उन्होंने सकल जैन समाज को इस आराधना में शामिल होने का न्योता दिया है।

राज्य से दक्षिण पश्चिम मानसून की विदाई जल्द

रायपुर (विस)। रायपुर समेत पूरे प्रदेश में अब मानसून की विदाई हो रही है। मौसम विभाग ने प्रदेश के कुछ जिलों में बारिश होने की संभावना जताई है। मौसम विभाग के अनुसार, मानसून की विदाई का समय नजदीक आ गया है। मौसम विभाग की माने तो मानसून जाते-जाते भी अच्छी बारिश देकर जाएगा। रायपुर समेत प्रदेश के कई जिलों में आज बारिश हो सकती है।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHIN /2013/50354